RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 25 जून 2019/ पोस्टिंग तिथि 29 जून

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका जुलाई 2019

मूल्य ₹ 50

मोनोकोबो

जापानी कलाकार मोनोकोबो ने एक ऐसी दुनिया की कल्पना की है जिसमें मनुष्य विशाल जानवरों के साथ रहते हैं। जैसे कि बिल्लियाँ, उल्लू, पाण्डा, खरगोश, कुत्ते इत्यादि। इस दुनिया में बिल्ली जब उदास होती है तो वह किसी मनुष्य को उठाकर उसको गले से लगा सकती है। यहाँ का माहौल शान्त है, सुन्दर है। स्टूडियो घिबली से प्रेरित 24 वर्ष की मोनोकोबो असल में कौन हैं, यह हमें पता नहीं। सोशियल मीडिया पर उनका नाम है Ariduka55.

अंक 394 जुलाई 2019

चकमक

इस बार

... 2

मेरे पिता – कार्ल सगान से मिले...- साशा सगान 4

ज़ोर - शादाब आलम 6

किट्टू उड़नछू! - हर्षिका उदासी 7

क्यों-क्यों? 10

पिंटु पेपरी - मुकेश मालवीय 12

गणित है मज़ेदार 14

तुम भी जानो 16

घर में क्या होता है?- सी एन सुब्रह्मण्यम् 17

पहली बारिश का मतलब - रोहन चक्रवर्ती 20

तुम भी बनाओ 21

चूं-चूं करती... - नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउण्डेशन 22

मुन्नू की मूँछें - वीरेन्द्र दुबे 24

इन्सानों के आसपास - जितेश शेल्के व कालू राम शर्मा 25

गोपी गवैया बाघा बजैया - उपेन्द्रकिशोर रायचौधरी 27

दुर्घटनाओं की...- विंग कमाण्डर के टी सुधीर 30

बीमारियों को सूँघने के लिए इलेक्ट्रॉनिक नाक 32

मेरा पन्ना 34

भूल-भुलैया 40

माथापच्ची 41

चित्रपहेली 43

आखिरी तारीख - लवलीन मिश्रा 44

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी
सजिता नायर
गुल सारिका झा

डिज़ाइन
कनक शशि

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
कमलेश यादव

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं। एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य

एकलव्य फाउण्डेशन, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026, फोन: +91 755 2977770 से 3 तक
email - chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in; www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

मेरे पिता कार्ल सगान से मिले अमरत्व और मृत्यु के सबक

साशा सगान

हम एक रेतीले रंग के पत्थर से बने मकान में रहते थे। सामने के दरवाज़े के ऊपर पत्थर पर एक पंखवाला साँप और सोलर डिस्क तराशी हुई थी। लगता था यह प्राचीन सुमेरिया से लाई कोई चीज़ हो, या इंडियाना जोन्स (की कथा) से। किसी भी सूरत में यह न्यू यॉर्क प्रदेश के एक शहरी इलाके की चीज़ नहीं लगती थी। हमारा घर एक गहरी खाई के ऊपर बसा था जिसके पार इथका शहर था। पिछली शताब्दी के अन्त में यह मकान स्फिंक्स हेड टूम्ब नामक इथका शहर के कॉरनेल विश्वविद्यालय के एक रहस्यवादी समिति का मुख्यालय था। शताब्दी के दूसरे भाग में इसमें एक रसोई और कुछ शयन-कक्ष जोड़े गए थे। और 1980 के आते-आते इसे एक निजी घर का रूप दे दिया गया था जिसमें मैं अपने अद्भुत माँ और पापा के साथ रहती थी।

मेरे पिता, कार्ल सगान, कॉरनेल में अन्तरिक्ष विज्ञान और आलोचनात्मक चिन्तन पढ़ाते थे। इस समय तक वे काफी मशहूर हो गए थे और अकसर टी.वी. पर दिखाई देते थे – जहाँ वे ब्रह्माण्ड के बारे में अपनी प्रभावशाली जिज्ञासा से लाखों लोगों को प्रेरित करते थे। पर स्फिंक्स हेड टूम्ब के अन्दर वे और मेरी माँ – एन ड्रुयन – मिलकर किताबें, निबन्ध और नाटक लिखते थे। उनके अनुसार अन्धविश्वास, रहस्यवाद और अन्धभक्ति संस्कृति पर हावी होते जा रहे थे। इनकी जगह वे विज्ञान की विधि के फलसफे को लोकप्रिय बनाने के लिए जुटे रहते थे। वे एक-दूसरे से बेइन्तेहा प्यार करते थे। और अब एक वयस्क के रूप में मैं देख पाती हूँ कि उनकी ये पेशेवर साझेदारियाँ उनके मिलन का ही एक और रूप था, प्यार करने का एक और तरीका। ऐसा ही एक काम था 13 कड़ियों का एक टी.वी धारावाहिक। नाम था कॉसमॉस। इसे मेरे माता-पिता ने 1980 में मिलकर लिखा था और पापा ने इसे प्रस्तुत किया था। इसका एक नया रूप मेरी माँ ने हाल में फॉक्स चैनल पर दोबारा प्रस्तुत करना शुरू किया है।

प्रारम्भिक स्कूल में दिन बिताने के बाद, घर आकर खाने की मेज़ की चर्चाओं में, एक-एक करके, मुझे ब्रह्माण्ड के चिरकालिक इतिहास के पाठ और संशयी विचारों (sceptical thought) में डूबने के मौके मिलते। मेरे माता-पिता मेरे "क्यों" वाले सवालों

की झड़ी का बहुत धीरज से जवाब देते। और जवाबों में एक बार भी उन्होंने यह नहीं कहा कि "मैंने कहा इसलिए" या "बस ऐसा ही होता है"। हर सवाल को एक सोचा-समझा और ईमानदार जवाब मिलता था – उन सवालों को भी जिनके कोई जवाब होते ही नहीं।

एक बार जब मैं बहुत छोटी थी – मैंने पापा से उनके माता-पिता के बारे में पूछा। मैं अपने नाना–नानी को करीब से जानती थी, पर यह जानना चाहती थी कि मैं कभी अपने दादा-दादी से क्यों नहीं मिली थी।

क्योंकि वे मर गए हैं, पापा ने उदासी से कहा।

"क्या तुम उनसे फिर कभी मिल पाओगे?" मैंने पूछा।

उन्होंने अपने जवाब पर कुछ पल ध्यान से सोचा। आखिर में उन्होंने कहा कि अपने माता-पिता से मिलने से ज़्यादा दुनिया में वे कुछ नहीं चाहते। पर उनके पास न तो कोई कारण था, और न ही कोई प्रमाण – जो मृत्यु के बाद के जीवन के विचार का समर्थन करे। इसलिए वे चाहते हुए भी इस लालच में यकीन नहीं कर सकते थे।

"क्यों?"

तब उन्होंने मुझे बहुत नरमी से बताया कि कुछ बातों पर सिर्फ इसलिए यकीन करना बहुत खतरनाक हो सकता है क्योंकि आप बस यह चाहते हों कि वे सच हों। अगर आप खुद से और दूसरों से, खासकर उनसे जो सत्ता पर काबिज़ हैं, सवाल न पूछें तो आप धोखा खा सकते हैं। उन्होंने मुझे बताया कि हर वह चीज़ जो सचमुच वास्तविक है, जाँच पर खरी उतर सकती है।

जहाँ तक मुझे याद है, यही पहली बार था जब मैंने मौत के स्थायित्व (चिरकालिकता) को समझना शुरू किया था। जैसे-जैसे मैंने एक अस्तित्व के लघु-संकट का सामना किया, मेरे माता-पिता ने मुझे सहारा दिया, अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ज़रा भी हिले बगैर।

"तुम ज़िन्दा हो, अभी – इसी पल। यह एक गज़ब की बात है," उन्होंने मुझसे कहा। अगर तुम एक अकेले इन्सान के पैदा होने के रास्ते में पड़ने वाले उन लगभग अनगिनत दोराहों पर गौर करो, उन्होंने कहा, तो तुम्हें इस बात का शुक्र मनाना चाहिए कि इस पल तुम तुम हो। मसलन, उन विशाल संख्या में मौजूद वैकल्पिक ब्रह्माण्डों के बारे में सोचो जहाँ तुम्हारे पर-पर-दादा-दादी कभी मिले ही न हों और तुम बने ही न हो। इससे भी आगे, तुम एक ऐसे ग्रह पर रहने का आनन्द ले पा रही हो जहाँ उद्विकास (Evolution) की मदद से तुम हवा में साँस ले सकती हो, पानी पी सकती हो, और हमारे सबसे करीबी सितारे की गर्मी से प्यार कर सकती हो। तुम डी.एन.ए. के द्वारा पीढ़ियों से जुड़ी हुई हो – बल्कि उससे भी पीछे जाएँ तो तुम पूरे ब्रह्माण्ड से जुड़ी हुई हो – क्योंकि तुम्हारे शरीर की हर कोशिका सितारों के दिल में पकी है। हम लोग तारा-कणों से बने हैं, मेरे पापा का एक मशहूर वाक्य है, और उन्होंने मुझे ठीक वैसा ही महसूस कराया।

ज़ोर

शादाब आलम
चित्र: हबीब अली

चमत्कार हो जाता है जब
लगता जी से ज़ोर।
चढ़ी साइकिल पे प्यारी
तड़-बड़-तड़ पैडल मारी
छूट गई पीछे दूरी
छूट गयीं सखियाँ सारी।

बढ़ी रौंदकर कीचड़, पत्थर
वह मंज़िल की ओर।
बड़े जोश में था दारा
फूँ-फूँ-फूँ-फूँ फुफकारा
दम भरके जब फूँका तो
फूला, पिचका गुब्बारा।

चट-चट-चट-चट बजी तालियाँ
गूँजा मीठा शोर।
सुंदर पंखों वाला है
सिर पे मुकुट निराला है
चमकीली, लंबी गर्दन
बेहद भोला-भाला है
दिया ख़यालों को धक्का तो
मन मे नाचा मोर।

किट्टू उड़नछू! - 3

‘मैड’ मधेश्वरी

हर्षिका उदासी
अंग्रेज़ी से अनुवाद: भरत त्रिपाठी
चित्र: लावण्या नायडू

यह हर्षिका उदासी की अंग्रेज़ी किताब *Kittu's Very Mad Day* का हिन्दी अनुवाद है।

अब तक तुमने पढ़ा :

माधव नाम का आइसक्रीम वाला एक छोटे बच्चे को अपना ग्राहक समझकर आइसक्रीम के लिए पूछता है। वह बातूनी बच्चा 'किट्टू' आइसक्रीम खा लेता है और पैसे भी नहीं देता। लेकिन जब किट्टू उसे बताता है कि उसका एक पैर नहीं है और वह खो गया है तो माधव अपनी साइकिल पर लादकर उसे अपने साथ ले जाता है। किट्टू के पिता हीरे के व्यापारी हैं। काम के सिलसिले में पन्ना आए थे। इसी बहाने उनके पूरे परिवार, यानी चौदह लोगों की सैर हो जाती है। मुम्बई वापस जाते समय एक ढाबे पर किट्टू छूट जाता है। अपने अजीबोगरीब परिवार से अलग होकर उसे मज़ा आ रहा है।

अब आगे...

“हम कहाँ जा रहे हैं?” किट्टू ने माधव से पूछ ही लिया।

किट्टू अपने जीवन की पहली साइकिल सवारी का खूब मज़ा ले रहा था। वो धीमी-धीमी हवा का आनन्द ले रहा था जो उसके बालों को सहलाते हुए बह रही थी। पर साइकिल के डण्डे पर बैठे-बैठे उसके पुट्ठे काफी दर्द करने लगे थे। यहाँ तो उसका बायाँ यानी आधा पैर ज़्यादा आराम में था, और उसे बराबर ये ध्यान रखना पड़ रहा था कि दायाँ पैर पैडल से न टकरा जाए क्योंकि वो अजीब ढंग से लटक रहा था।

“पुलिस स्टेशन,” माधव ने गम्भीरता से कहा।

“पुलिस स्टेशन?”

“हाँ, नहीं तो और कहाँ। वो लोग तुम्हारे माता-पिता को ढूँढेंगे। और फिर मैं अपनी कुल्फी बेच सकूँगा।”

किट्टू को ये बात कुछ जमी नहीं क्योंकि दो साल की उम्र से ही उसके मन में पुलिस वालों के प्रति एक गहरा अविश्वास पैदा हो गया था। और इस अविश्वास के पीछे माँ द्वारा लगातार दी जाने वाली धमकियों का काफी हाथ था: “किट्टू अगर तुमने खाना नहीं खाया तो पुलिस वाला आएगा और तुम्हें पकड़कर ले जाएगा।” “किट्टू तुम बहुत तंग कर रहे हो! रुको मैं अभी पुलिस अंकल को फोन करती हूँ। वो तुम्हें पकड़कर ले जाएँगे!”

हालाँकि कभी कोई पुलिस वाला किट्टू को पकड़कर नहीं ले गया, पर किट्टू कतई नहीं चाहता था कि उसे इस तरह के अनुभव से कभी भी गुज़रना पड़े। वो ऐसे किसी कमरे में भी नहीं जाना चाहता था जिसमें बहुत सारे पुलिस वाले हों। यही समय था किसी भी मुश्किल परिस्थिति से बच निकलने की अपनी सबसे अच्छी तरकीब आज़माने का।

“पुलिस? हाह! पुलिस के पास जाने से तुम मुसीबत में फँस सकते हो।”

“लेकिन क्यों? किसी गुम हो गए लड़के को पुलिस स्टेशन पहुँचाने के लिए? कैसी बेवकूफी भरी बातें कर रहे हो!” माधव ने हँसी उड़ाते हुए कहा।

पर पाँच मिनट बाद, माधव ने यू-टर्न ले लिया था। वो हाइवे से दूर एक पथरीले रास्ते पर बहुत उदास और दुखी होकर साइकिल चलाए जा रहा था। 15 मिनट बाद वो लोग जनवार गाँव में थे और माधव के घर के बाहर खड़े थे। और वो नन्हा तानाशाह खुशी से फूला नहीं समा रहा था।

माधव का घर छोटा था। आगे के आँगन में कपड़े धोने की जगह थी। एक कोने में इमली के पेड़ के आसपास बेतरतीब ढंग से कुछ बेलें उग रही थीं। और एक तरफ कपड़े सुखाने की रस्सी बँधी थी जिस पर अभी-अभी धुले कपड़े लदे हुए थे।

आँगन में एक औरत खड़ी हुई थी जो कपड़ों के साथ मशक्कत कर रही थी और अपने आप से बातें भी करती जा रही थी। "मुझे समझ में नहीं आता कि तीन लोग एक दिन में बालटी भर कपड़े कैसे गन्दे कर लेते हैं। लोग तो यही सोचेंगे कि मुझे कपड़े धोने और सुखाने के अलावा और कोई काम..." माधव को देखते ही उसने अपने आप से बड़बड़ाना बन्द किया और माधव से शुरू। "तुम इस समय यहाँ क्या कर रहे हो? और ये लड़का कौन है? इसका सिर्फ एक पैर क्यों है? तुम ठीक तो हो? सब्ज़ी खरीदी कि नहीं? कुछ कहोगे भी या लकवा मार गया है?"

ये थी माधव की पत्नी मंगलेश्वरी, जो बहुत मेहनती थी। लेकिन उसकी ज़बान उससे भी ज़्यादा मेहनती थी। वो पूरे समय बोलती थी, और उसकी बातों में ज़्यादातर सवाल होते थे।

"अन्दर तो चलो, सब बताता हूँ," माधव ने उससे फुसफुसाकर कहा।

"क्यों? अन्दर क्यों? क्या यहाँ..."

लेकिन उसके पति ने उसे जल्दी से अन्दर खींच लिया।

पर उनके अन्दर जाने और दरवाज़ा बन्द हो जाने के बाद भी किट्टू को उनकी बातचीत सुनाई दे रही थी।

आदमी की आवाज़: सुनो! बाहर जो लड़का है वो कोई सामान्य लड़का नहीं है।

औरत की आवाज़: हाँ मुझे पता है।

आदमी: तुम्हें पहले से ही पता है? कैसे?

औरत: क्योंकि उसका एक ही पैर है ना।

आदमी: अरे नहीं बाबा!

औरत: तो फिर? और क्या बात है? क्या ये तुम्हारे भाई का लड़का है? क्या ये हमसे हमारा घर छीनने आया है?

आदमी: बस! बस करो! क्या फालतू की बातें किए जा रही हो! ध्यान से सुनो। वो मुम्बई के किसी डॉन का बेटा है।

औरत: डॉन? यानी गुण्डा? तो वो यहाँ क्या कर रहा है?

आदमी: वो गुम हो गया है। उसे अपने माँ-बाप को ढूँढना है। और हमें उसकी मदद करनी है।

किट्टू की खूबी थी कि वो एक मिनट में कोई भी कहानी गढ़ सकता था। माधव को ये समझाते हुए कि उसे पुलिस स्टेशन क्यों नहीं जाना चाहिए, उसने अपने पिता की खलनायक जैसी छवि पेश कर दी थी। उन्हें डॉन बना दिया था। उसने साफ कर दिया था कि अगर माधव ने उसे पुलिस को सौंप दिया तो उसके पिता माधव के साथ क्या करेंगे इसका ज़िम्मेदार वो नहीं होगा। इसके उलट, अगर माधव उसे अपने घर में सुरक्षित रखेगा तो शायद उसके पिता माधव को कुछ इनाम दे दें।

अन्दर कुछ मिनट तक खामोशी छाई रही। किट्टू तो ये बात नहीं जानता था लेकिन अपनी पूरी ज़िन्दगी में मंगलेश्वरी बिना कोई सवाल पूछे इतनी देर तक कभी चुप नहीं रही थी। लेकिन तभी किट्टू ने कुछ देखा जिससे उसका ध्यान बँटा।

बाहर हुई एक ज़ोरदार चीख ने उस खामोशी को तोड़ दिया। "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई उसको छूने की?"

मंगलेश्वरी और माधव दौड़कर बाहर आए। कहीं डॉन ने उनके घर पर हमला तो नहीं कर दिया था?

"हाँ, मैंने छू दिया! क्या हो गया अगर छू दिया तो? वैसे भी ये है क्या? क्या सोने का बना है?"

"नहीं! हीरों का!" किट्टू से उलझ रही उस लड़की ने गुस्से से जवाब दिया।

"चुप-चुप मधेश्वरी!" माधव ने मधेश्वरी की तरफ आँखें फाड़कर देखा और आँख भी मारी। हालाँकि एक साथ दोनों चीज़ें करते हुए माधव काफी अजीब दिखाई दिया।

मधेश्वरी ने अपने पिता की तरफ झाँककर देखा ये समझने के लिए कि उनकी आँख अचानक से फड़कने लगी थी या फिर वो आँखों से कुछ इशारे कर रहे थे।

लेकिन वो कुछ कह पाती, इससे पहले ही किट्टू की हँसी छूट पड़ी।

"मधेश्वरी! कितना अजीब नाम है। तुम पर जँचता भी है। नहीं, इससे भी अच्छा लगेगा मैड!" किट्टू ने तुरन्त मधेश्वरी के नाम की अंग्रेज़ी स्पेलिंग के पहले तीन अक्षरों को लेकर उसका एक नया नाम बना दिया था – 'मैड' मतलब पागल।

"अच्छा, मेरे नाम का मज़ाक बना रहे हो। और तुम कौन हो – एक पैर वालों के राज्य के राजा?"

"खबरदार, मेरे पैर के बारे में कुछ कहा तो। मेरा नाम किट्टू है।"

"देखो तो ज़रा। खुद का नाम किट्टू है और इनको मधेश्वरी अजीब नाम लगता है।" अब ठहाका लगाकर हँसने की बारी मधेश्वरी की थी।

"बस करो तुम दोनों!" अपने गंजे सिर को पकड़ते हुए माधव बोला। "मधेश्वरी, किट्टू कुछ दिनों तक हमारे साथ ही रहेगा। ये खो गया है और हमें इसके मम्मी-पापा को ढूँढना है।"

"ये अपने मम्मी-पापा को फोन क्यों नहीं लगा लेता? या इस राजा के राज्य के लोगों के पास फोन नहीं हैं?"

"बन्द करो लड़ाई!" माधव ने अपनी बेटी की बात को नज़रअन्दाज़ करते हुए कड़क आवाज़ में कहा। इतना सब होने के बाद बस यही होना बाकी रह गया था।

किट्टू और मधेश्वरी उस छोटे-से आँगन के एक-एक छोर की तरफ चल दिए, लेकिन जाते हुए मधेश्वरी ने किट्टू के कान में धमकाने वाले अन्दाज़ में फुसफुसाकर कहा, "मुझसे दूर रहना!"

सबसे बड़ा बदलाव तो मधेश्वरी में हुआ था जिसको इतना झटका लगा था कि वो बिलकुल चुप हो गई थी।

...जारी

क्यों-क्यों?

क्यों क्यो में हमारा इस बार का सवाल था, “यदि बड़ी संख्या में बिल्लियाँ खतम हो जाएँ तो क्या होगा, और क्यों?” यह सवाल एक ऐसी स्थिति की कल्पना करने की बात करता है, जिसकी सम्भावना कुछ जानवरों के लिए तो तय थी। तीसरी से लेकर दसवीं के बच्चों के कुछ जवाब हम यहाँ दे रहे हैं। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपना जवाब लिख भेजना...

••••••••••

- बिल्लियाँ खतम हो जाएँगी तो अगली पीढ़ी बिल्ली को देख नहीं पाएगी।
- चीन में एक कैट मीट फेस्टिवल होता है। इसके लिए हर साल 2 से 3 लाख बिल्लियाँ मारी जाती हैं। यदि बिल्लियाँ खतम हो गईं तो चीन में कैट मीट फेस्टिवल नहीं हो पाएगा।
- हांगकांग में कहीं-कहीं सफेद बिल्ली को भगवान मानते हैं, तो उनके तो भगवान ही खतम हो जाएँगे।
- बिल्लियाँ नहीं रहेंगी तो कुत्ते-बिल्ली की लड़ाई भी खतम हो जाएगी।
- फिर बिल्ली पर पोयम बनना भी बन्द हो जाएगी।
- चूहों का जीवन लम्बा हो जाएगा और उन्हें बिलों में नहीं छुपना पड़ेगा।
- बिल्ली और साँप की लड़ाई नहीं हो पाएगी।
- आगे के लोग बिल्ली की म्याऊँ-म्याऊँ नहीं सुन पाएँगे।
- पक्षियों की संख्या में वृद्धि होगी क्योंकि बिल्ली पक्षियों को भी पकड़कर खा जाती है।

अंकित, सुरेन्द्र कुमार, राहत परवीन, गौरव, विकास, विशाल और ऋतिका, लर्निंग रिसोर्स सेंटर, अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, जयपुर, राजस्थान

••••••••••

बिल्ली एक पालतू जानवर है लेकिन कभी-कभी वह जंगली भी होती है। अगर बिल्लियाँ नहीं होंगी तो चूहे बहुत सारे हो जाएँगे। वो हमारी किताबें खा लेंगे तो फिर हम स्कूल नहीं जा पाएँगे।

सौरव सरकार, पाँचवीं, मिलनपुर एल पी स्कूल, माजुली, असम

••••••••••

पता है, एक दिन खेत से इतने सारे मोटे-मोटे चूहे निकले। बिलकुल तारे जितने। ये बात सुनते ही सारी बिल्लियाँ खुश हो गईं। सब बिल्लियाँ चूहों पर झपट्टा मार उन्हें चट कर गईं। लेकिन ओवरडोज़ होने के कारण उनका पेट खराब हो गया और डॉक्टर काका भी बीमार थे इसीलिए सभी बिल्लियाँ चल बसीं। सभी लोग बहुत उदास हुए। लेकिन सुमन खुश थी, क्योंकि जब उसे कोई मौसी बुलाता तो उसे बिल्ली मौसी वाली फीलिंग आती थी। अब वह खुश है क्योंकि बिल्ली तो है ही नहीं!

निशा गुप्ता, दसवीं, बाल भवन किलकारी, पटना, बिहार

••••••••••

बिल्ली चूहे मार के खा जाती है। बिल्ली घर का सारा दूध पी जाती है। हमारे घर का नुकसान हो जाता है। बिल्ली सभी घर की मछलियाँ चोरी कर खा जाती है। बिल्लियाँ वफादार होती हैं।

लकी शर्मा, पाँचवीं, अवध पीपुल्स फोरम, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

••••••••••

अगर बिल्लियाँ न हों तो चूहे अपना राज चलाने लगेंगे और जहाँ जाएँगे वहाँ पार्टी करेंगे। चूहों को क्या पता कि अच्छा व खराब कपड़ा कौन-सा है! वो तो कोई भी कपड़ा लेंगे और उसे कुतर के रख देंगे। बिल्लियाँ खबर न लें तो चूहा भी डॉन बनकर घूमेगा और खेतों को नष्ट कर देगा और किसानों को खूब तंग भी करेगा। कई लोग कहते हैं कि अगर काली बिल्ली रास्ता काट ले, तो दिन खराब जाएगा। लेकिन ऐसा कुछ नहीं होता है। अगर दिन खराब जाने वाला होता है तो खराब ही जाता है। इसमें सब बिल्ली को फँसा देते हैं।

हर्षित राज, छटवीं, बाल भवन किलकारी, पटना, बिहार

हमारे घर पर जितने चूहे हैं बिल्ली उन्हें मार देती है और हमारे घर का दूध भी पी जाती है। बिल्ली का होना इसलिए ज़रूरी है। बिल्ली को मारना नहीं चाहिए। पालतू बिल्लियाँ होती हैं और जंगली भी होती हैं। बिल्ली चोरों को भगाती है। बिल्ली हमारे घर में ज़रूरी है।

हर्षित रावत, दसवीं, ग्रामर अकादमी, अवध पीपुल्स फोरम, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

बिल्लियाँ गायब होंगी तो कुत्तों को खाना नहीं मिलेगा। लोगों के घर का दूध बचेगा। जो लोग मानते हैं कि बिल्ली अगर रास्ते से निकले तो उनका रास्ता कट जाता है, उनका यह अन्धविश्वास खतम हो जाएगा। बिल्लियाँ नहीं रहेंगी तो चूहे भी बचेंगे और गणेश जी भी खुश होंगे। बिल्लियाँ खतम होंगीं तो भी अच्छा है, नहीं होंगी तो भी अच्छा है। बिल्लियाँ खतम इसलिए भी नहीं होनी चाहिए क्योंकि दुनिया का एक जानवर कम हो जाएगा। बिल्लियाँ खतम होनी भी चाहिए क्योंकि वो घर का दूध पी जाती है। सब्ज़ियों और सारे खाने में भी मुँह डाल देती हैं। फिर उस खाने को फेंकना पड़ता है और हमें पाप लगता है। इसीलिए बिल्लियाँ होनी भी चाहिए और नहीं भी होनी चाहिए।

वल्लभी महाजन, आठवीं, महेश्वर, खरगोन, मध्य प्रदेश

अगर बिल्लियाँ न हो तो क्या होगा?
क्या होगा, घर का खाना बच जाएगा।
धरती का बोझ कम होगा,
लेकिन चूहों को परेशान कौन करेगा?
चुहिया की चुईं-चुईं बढ़ जाएगी
हमें परेशान कर जाएगी
कपड़े हमारे वो
कुतर जाएगी
फिर हम बोलेंगे
बिल्ली मौसी आजा ना,
चूहों को अपना डिनर बना जा ना।

सुप्रिया कुमार, बाल भवन किलकारी, पटना, बिहार

अगर एक भी बिल्ली नहीं होगी तो फिर चूहों का राज चलेगा। मुझे बिल्ली पसन्द नहीं है क्योंकि वो चूजों को खाती है। लेकिन अगर बिल्ली नहीं रहेगी तो फिर चूहे हमारा खाना खा जाएँगे। हम भूखे रहेंगे और हम इन्सानों के लिए बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो जाएगी।

गरिमा दास, पाँचवीं, नातुन खर्जनपुर एल पी स्कूल, माजुली, असम

अगर सारी बिल्लियाँ खतम हो जाएँ तो स्वर्ग में हलचल मच जाएगी। शंकर जी को एक दिन में लाखों लीटर दूध चढ़ेगा। गणेश भगवान दिन-रात पार्टी करेंगे। धरती पर भी कोई घण्टी नहीं माँगेगा और लोहार का रोज़गार खतम हो जाएगा। दुनिया में सबका दिन अच्छा ही बीतेगा क्योंकि कोई रास्ता नहीं काटेगा।

ज़ैनुलब्दीन, पहली, अवध पीपल्स फोरम, फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

अवध पीपुल्स फोरम, के बच्चे

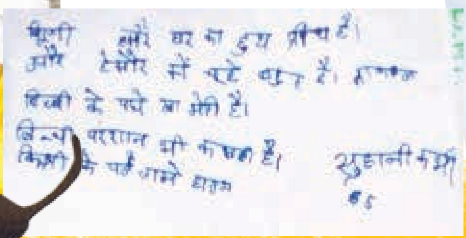

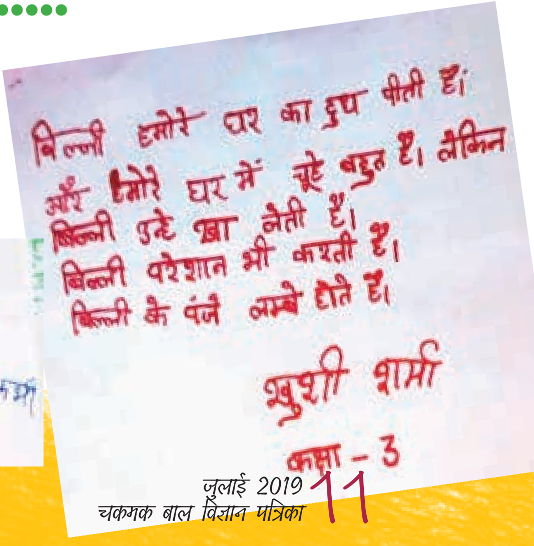

बिल्ली हमोरे घर का दुध पीती है।
और हमोरे घर में चूहे बहुत है। लैकिन
बिल्ली उन्हे खा लेती है।
बिल्ली परेशान भी करती है।
बिल्ली के पंजे लम्बे होते है।
खुशी शर्मा
कक्षा – 3

वह तीन भाइयों में सबसे छोटा था। घर-परिवार, मोहल्ले-पड़ोस ने तीनों भाइयों की एक जैसी परवरिश की, पर पिंटु औरों के जैसा नहीं निकला। जहाँ दोनों भाइयों ने खूब शैतानियाँ कीं, वहीं पिंटु सीधा-सरल बना रहा। दोनों भाई बड़ों की बातें अनसुनी करते, पर पिंटु सबकी बातें ध्यान से सुनता। बड़े भाई और उनके दोस्त एक ही समय में कई-कई खेल खेलते, पर पिंटु अकेले ही किसी ना किसी काम में लगा रहता। और जब वह किसी काम में लग जाता तो फिर समय भी उसके बीच में नहीं आता।

स्कूल में पिंटु जब गिनती समझने की धुन में था, तब उसके साथी पहाड़े पर छलाँग लगाते हुए जोड़-घटाव के सवाल कर रहे थे। पिंटु जब अक्षर और मात्राओं में आवाज़ ढूँढ रहा था तब बाकी के दोस्त, भाई शब्दों और वाक्यों की चिल्लाहट में नया शोर रच रहे थे। इस तरह स्कूल पिंटु के साथ दूर तक नहीं चल पाया।

अब पिंटु ने अपने आसपास की दुनिया को धुन लगाकर समझने की कोशिश की। दिक्कत यह थी कि यह सब समझने के लिए उसके साथ कोई नहीं होता था, सिवाए उसकी माँ के। वह हमेशा माँ के साथ रहता। माँ ओखली में अनाज कूटतीं तो वह मूसल के ऊपर-नीचे आने-जाने की लय को आँखों से पकड़ता। माँ घट्टी पीसतीं तो कभी वह पाट पर बैठी चींटी को घूमते देख खुश होता, तो कभी माँ की चूड़ियों के गीत सुनता। वह माँ के कामों में हाथ भी बँटाता जैसे, कुएँ से पानी लाना, गोबर के कण्डे थोपना और चूल्हा फूँकना। पिंटु को हर वक्त अपने साथ रखने वाली माँ एक दिन अचानक ही उसे अकेला छोड़कर बहुत दूर चली गईं।

पिंटु पेपरी

मुकेश मालवीय
चित्र: शुभम लखेरा

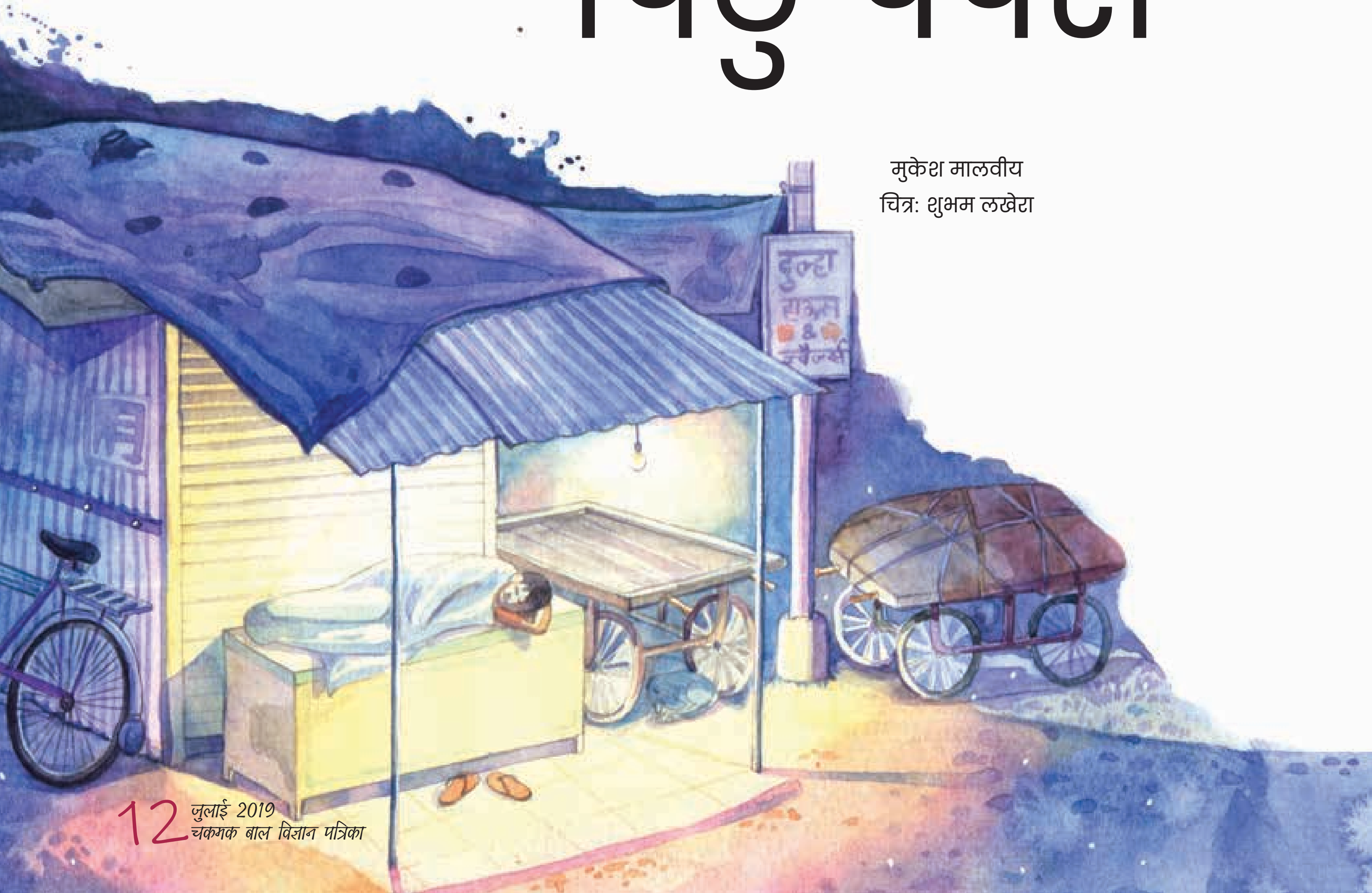

भाई जल्दी ही बड़े हो गए और काम-धाम में लग गए। एक भाई ने पास के शहर में एक दुकान खोल ली। कुछ दिनों बाद दूसरा भाई भी उसमें हाथ बँटाने लगा। दुकान बड़ी होती गई। भाइयों की हैसियत भी बढ़ी और उनका परिवार भी बड़ा हो गया। पिंटु भाइयों और उनके नए परिवारों से छूटता गया।

पिंटु गाँव और घर के काम करने लगा। उसके काम तो बस उसकी मर्ज़ी से चलते। इसलिए पिंटु के काम की कीमत कभी पैसों में नहीं आँकी जाती। पिंटु अपने गाँव के जिस घर या खेत में होता, वहीं किसी ना किसी की मदद कर रहा होता।

फिर एक समय ऐसा आया जिसने पिंटु को अपने गाँव में ही नहीं, आसपास के पाँच गाँवों में महत्वपूर्ण बना दिया। एक काम ने उस पर भरोसा जताया। इस काम को पिंटु इतनी शिद्दत से करता था कि कुछ ही दिनों में वह 'पिंटु पेपरी' के नाम से आसपास के पाँच-छह गाँवों में मशहूर हो गया। इन गाँवों में रोज़ सुबह लोग बेसब्री से उसका रास्ता देखते, पूछते रहते कि 'पिंटु पेपरी' आया कि नहीं।

हुआ यूँ कि जब पिंटु के भाइयों की दुकान बड़ी से और बड़ी होती गई, तो रात को दुकान बन्द करके गाँव वापस आने पर उनको दुकान की चिन्ता सताती। दुकान की चिन्ता जब ज़्यादा बढ़ गई तो उन्हें पिंटु का खयाल आया। भाइयों ने पिंटु को कहा कि अपनी दुकान रात में सूनी रहती है। तुझे रात में दुकान की रखवाली करनी है। भाइयों ने कहा तो पिंटु को दुकान को अपना समझने में कोई दिक्कत भी नहीं हुई। अब वह रोज़ शाम होते ही गाँव से शहर साइकिल से जाता। रात भर दुकान की रखवाली करता और सुबह होते ही गाँव वापस आ जाता। पिंटु को इस काम पर बहुत फक्र था। रास्ते में दो-तीन गाँव और पड़ते थे। इनसे गुज़रते हुए पिंटु की गर्दन ज़िम्मेदारी के अहम से ऊँची रहती।

इन गाँवों में अभी कुछ दिनों से एक-दो नई शुरुआत हो रही थीं। गाँव की आकस्मिक ज़रूरतों के लिए यहाँ एक-दो छोटी दुकानें खुल गई थीं। इन दुकानों पर शहर से पेपर (अखबार) आता था। गाँव के कुछ घरों में भी यह पेपर आना शुरू हुआ था। पर दिक्कत यह थी कि किसी गाँव में पाँच-सात पेपर बाँटने कौन पेपर वाला आएगा। इसलिए गाँव में यह पेपर कभी दूध बेचने गए दूधवाले, तो कभी शहर से आने वाले मास्टर जी के हाथों दोपहर तक आता। पेपर पढ़ने की लत गाँव के लोगों को धीरे-धीरे लग रही थी।

इधर कुछ दिनों से सुबह-शाम गाँव वाले पिंटु को आते-जाते देख रहे थे। सुबह-सुबह शहर से गाँव की ओर आने वाला वह पहला व्यक्ति होता। पता नहीं कैसे एक दिन ये पेपर पिंटु लेकर आ रहा था। इतनी सुबह पहली बार गाँव में पेपर आया था। गाँव वालों ने अपने अन्दाज़ में पेपर से ज़्यादा पिंटु का स्वागत किया। किसी ने अपने घर में उसे चाय पिलाई, तो किसी ने उसके पूरे परिवार के हालचाल पूछे। इस तरह कुछ ही दिनों में आसपास के इन गाँवों में पिंटु का नाम और काम अपना-अपना सा हो गया।

गणित है मज़ेदार

नीचे संख्याओं के कुछ क्रम दिए गए हैं। हर क्रम में चार-पाँच संख्याएँ हैं। तुम्हें क्रम की अगली संख्या पता करनी है। हर क्रम को बनाने में किसी नियम का उपयोग हुआ है। नियम का पता लगा लो तो क्रम को तुम आगे बढ़ाते जा सकते हो।

उदाहरण के लिए 1, 2, 3, 4, 5,... के क्रम में अगली संख्या है 6। इस क्रम का नियम है कि 1 से शुरू करके हर अंक में एक जोड़ना है। इस तरह अगली संख्या बनती है।

शुरुआत करते हैं कुछ आसान क्रम से। तो बताओ इनकी अगली संख्या -

3 5 7 9 ?

1 4 9 16 ?

3 5 8 13 21 ?

1 8 27 64 125 ?

अक्सर संख्याओं के किसी क्रम को देखकर ही हमें एक अन्दाज़ा लग जाता है कि नियम क्या है। पैटर्न को पहचानने की हमें छुटपन से एक आदत होती है। पहले क्रम में पेंसिल से काम करने की शायद ज़रूरत न पड़ी हो। बस हर संख्या में 2 जोड़ते जाओ और अगली संख्या का पता चल जाता है।

यही नियम है -

3+2=5, 5+2=7, 7+2=9, 9+2= 11

जवाब है - 11

संख्याओं का दूसरा क्रम 5 का पहाड़ा है। 5x1, 5x2, 5x3, तो अगली संख्या होगी 5x4=20।

तीसरा क्रम प्राकृत संख्याओं (नेचुरल नम्बर्स) के वर्ग से बनता है। 1x1, 2x2, 3x3, 4x4, तो अगली संख्या होगी 5x5=25।

चौथे क्रम से हम थोड़ी मुश्किल में पड़ जाते हैं। क्रम अब थोड़ा कठिन होते जा रहे हैं और सिर्फ देखकर इनको पूरा करना मुश्किल हो सकता है। तो चलो, एक तरीका सीखते हैं जिससे यह काम कुछ आसान हो जाए।

संख्याओं के हर क्रम के लिए एक तालिका बनाओ। सबसे पहले क्रम की सारी संख्याएँ लिखो। अब क्रम की दो-दो संख्याओं को आपस में घटाकर उनका अन्तर अगली लाइन में लिख लो। जैसे, पहले क्रम में 3 - 1 = 2, 5 - 3 = 2, 7 - 5 = 2...। हमें तालिका को तब तक बढ़ाते रहना है जब तक लाइन की सारी संख्याएँ समान ना हो जाएँ, जैसे, 1, 1, 1, या 2, 2, 2, या 3, 3, 3, या...

तो, पहले क्रम के लिए हमारी तालिका कुछ ऐसी होगी -

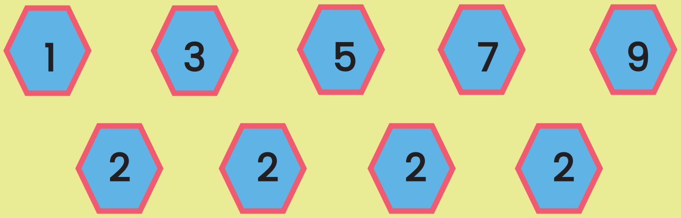

अब चूँकि आखिरी लाइन में सिर्फ 2 है। तो हम कह सकते हैं कि इस लाइन का पाँचवीं संख्या भी 2 ही होगी। इसे लिख लो। फिर पहली लाइन की अगली संख्या लिखने के लिए दोनों लाइनों की पाँचवीं संख्या को आपस में जोड़ लो। तो क्रम की अगली संख्या होगी - 11

अब दूसरा क्रम लेते हैं। इसकी तालिका है –

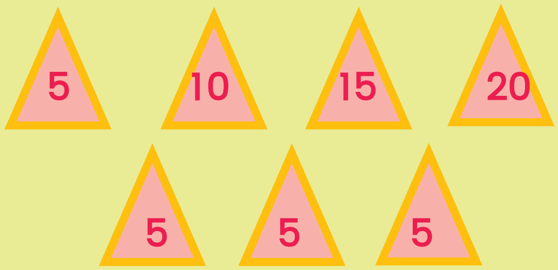

अगली संख्या जानने के लिए फिर से दोनों लाइनों की तीसरी संख्या को जोड़ लो। इस तरह से हमें जवाब मिलता है - 20

संख्याओं के तीसरे क्रम को लेने पर तालिका कुछ इस तरह बनती है-

क्रम को आगे बढ़ाने के लिए पहले आखिरी लाइन, फिर दूसरी लाइन और फिर पहली लाइन पूरी करो। क्या तुम्हें कुछ ऐसी तालिका मिली?

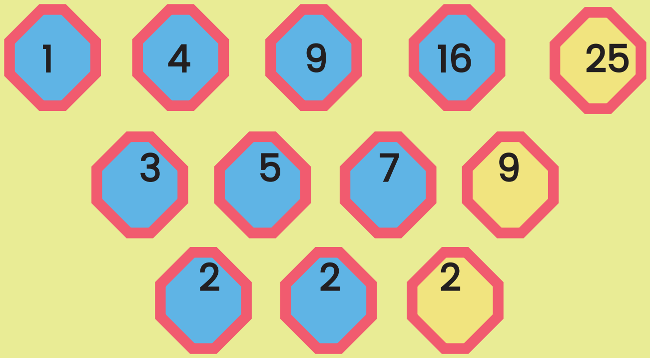

यहाँ जवाब है - 25

क्रम 4 व 5 के जवाब तुम्हें पेज 42 पर मिलेंगे।

तालिका का इस्तेमाल कर तुम भी संख्याओं का अपना कोई क्रम बना सकते हो और अपने दोस्तों से उसे पूरा करने को कह सकते हो। हमें लिखकर बताना कि ऐसा करने में मज़ा आया या नहीं।

डिज़ाइन: इशिता देबनाथ बिस्वास

कुत्तों को देखकर इतना प्यार क्यों आता है?

कुत्तों के पास एक ऐसी चीज़ है जिसके कारण अक्सर उन्हें देखकर हम पिघल जाते हैं। ये उनके चेहरे की एक मांसपेशी है। इसका इस्तेमाल कर वे अपनी भौंह को उठाकर आँखें बड़ी कर लेते हैं। इससे उनका चेहरा मासूम और उदास दिखने लगता है और हमें उन पर तरस और प्यार आ जाता है। इस खोज के पीछे एक कहानी है। अमेरिका के एक शेल्टर (जानवरों के आश्रम) में कुछ लोगों ने कुत्तों के अजनबियों से बर्ताव का एक वीडियो बनाया। इसे बारीकी से देखने पर पता चला कि 'पप्पी लुक' का इस्तेमाल करने वाले कुत्तों के किसी को पसन्द आने की सम्भावना ज़्यादा होती है। मज़े की बात है कि यह हुनर कुत्तों के सबसे करीबी रिश्तेदार भेड़ियों में नहीं है।

आइस्क्रीम के साथ चम्मच भी खा लो!

प्लास्टिक कचरे की बढ़ती हुई मात्रा से हम काफी परेशान हैं। खासकर सिर्फ एक बार इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक से। इनके विकल्प हम ढूँढते आ रहे हैं। इसी कारण हैदराबाद के नारायणा पीसापती ने प्लास्टिक की चम्मच व काँटों का एक विकल्प ढूँढ निकाला है - ज्वार व गेहूँ के आटे से बने चम्मच व काँटे। खाना खाने के बाद तुम इन्हें भी खा सकते हो। उन्हें यह बात तब सूझी जब वे 5000 मीटर की ऊँचाई पर एक बार ज्वार की रोटी खाने बैठे। रोटियाँ इतनी सख्त हो गई थीं कि उन्होंने चम्मच की तरह उनका इस्तेमाल किया। आज नारायणाजी और उनकी पत्नी की इस रेसिपी ने उनको देशभर में लोकप्रिय बना दिया है।

37 साल बाद बनीं डिस्को स्टार

रूपा बिस्वास गायिका बनना चाहती थीं लेकिन कई कोशिशों के बावजूद नाकामयाब रहीं। 1982 में उनके पिताजी छुट्टियों में परिवार को कनाडा ले गए। वहाँ उन्होंने इत्तेफाक से उन्होंने बांगला में 'डिस्को जैज़' के नाम से गानों की एक एलबम बनाई। ये उस समय की लोकप्रिय डिस्को शैली में रिकॉर्ड हुए जिसके लिए बप्पी लहरी और आशा भोंसले जाने जाते हैं। डिस्को जैज़ की थोड़ी बहुत बिक्री हुई। फिर कोलकाता आकर रूपा उसके बारे में भूल भी गईं। हाल ही में उनके बेटे ने इंटरनेट पर उसे खोजा तो पता चला कि उसकी माँ के वो गाने यू ट्यूब पर अपलोड हैं और पुराना एलबम 500 पाउण्ड (लगभग रु 45,000) में बिक रहा है। दिलचस्प बात है कि रूपा कभी नाइट क्लब नहीं गईं, यहाँ तक कि सलवार-साड़ी के अलावा उन्होंने कभी कोई और ड्रेस भी नहीं पहनी। लेकिन अब वो अपने उस पुराने एलबम के लिए मशहूर हो गई हैं। यानी कि कभी भी कुछ भी हो सकता है।

घर में क्या होता है ?

सी एन सुब्रह्मण्यम्

चित्र: कनक शशि

'मेरा काम खतम हो गया अब मैं घर जा रहा हूँ।' ऐसी बातें हम अकसर सुनते हैं। या फिर यह भी सुनते हैं कि मेरी पत्नी कोई काम नहीं करती है, सिर्फ घर सँभालती है। जब हम ऐसी बातें कहते हैं तो हम यह मानकर चलते हैं कि काम वही है जिससे पैसों की कमाई हो। और यह काम आमतौर पर घर के बाहर, दुकान पर, कारखानों में, खेतों में या फिर दफ्तरों में होता है। इस कारण हम घर में होने वाले उत्पादक काम को काम ही नहीं मानते हैं। जैसे, बच्चों-बूढ़ों या बीमारों की देखभाल, रोज़मर्रा के काम जैसे, खाना बनाना, साफ-सफाई, कपड़े धोना और सुख-दुख में एक-दूसरे का साथ देना...। ये सब काम तब माना जाता है जब इन्हें करने के लिए किसी को हम वेतन देकर रखते हैं (जैसे नर्स, रसोईए, धोबी वगैरह) या खुद वेतन के लिए इन कामों को करते हैं। जब घर में हम यह सब करते हैं, तो माना ही नहीं जाता है कि यह सब भी काम हैं।

यह केवल बोलचाल की समस्या नहीं है, बड़े-बड़े अर्थशास्त्री जब राष्ट्रीय आय की गणना करते हैं तो वे भी घरेलू काम को गिनती में नहीं लेते हैं। वे तो मानते ही नहीं हैं कि घर में कोई उत्पादक काम होता है। उनके लिए घर केवल खपत की जगह है, जहाँ लोग अपने कमाए हुए पैसे खर्च करते हैं।

एक ज़माना था जब दुनिया में सारा उत्पादन घर के दायरे में ही होता था – चाहे वह खेती-बाड़ी हो या पशुपालन या फिर कारीगरी। दरअसल खेती करने को गिराती या गृहस्ती कहते थे (यानी घर चलाना)। तो यह कैसे हुआ कि हम आज घर को उत्पादन और काम की जगह नहीं मानते हैं और काम को सिर्फ दुकानों में, कारखानों में या दफ्तरों में होते हुए देखते हैं?

नागालैण्ड के अंगामी नागा घरः यहाँ महिलाएँ कपड़े बुनती हैं।

आज से 50-100 साल पहले तक हम देखते हैं कि देश का अधिकांश उत्पादन खेती-बाड़ी में होता था। ज़्यादातर सामान का उत्पादन भी घरेलू कारीगरों द्वारा होता था। खेती करने वाले किसान परिवार मिल-जुलकर घर और खेतों में काम करते थे। इनमें बच्चों से लेकर बूढ़े और घरेलू जानवर जैसे गाय, बैल, कुत्ते, बकरी आदि सभी शामिल होते थे। कुछ काम खेतों में होता था, तो कुछ घर पर। घर के चारों ओर की ज़मीन पर भी सब्जी-भाजी, फल आदि उगाए जाते थे और खेती के लिए ज़रूरी खाद तैयार होती थी। रोज़ाना गाय-बैलों व अन्य जानवरों की सेवा भी करनी पड़ती थी। कुल मिलाकर किसान का घर ही उत्पादन की मूल इकाई था। घर में किसान परिवार का भरण-पोषण होता था, अनाज आदि का उत्पादन होता था और पालतू जानवरों की देखभाल भी होती थी। घर केवल खाने-पीने, मनोरंजन या आराम करने की जगह न होकर उत्पादन की इकाई भी था।

लगभग यही बात कारीगरी के लिए भी लागू थी। कारीगर परिवार के सभी सदस्य मिलकर उत्पादन के अलग-अलग काम घर पर करते थे, और सामान बेचने का काम भी काफी कुछ घर से ही होता था। समाज में ऐसे बहुत कम लोग थे जिनके पास न खेती थी, न घरेलू कारीगरी, और जिन्हें दूसरों के घर या खेतों में अपनी सेवाएँ देनी पड़ती थीं। ये दलित समाज के लोग थे - जिनके घरों में रोज़ाना चूल्हा भी नहीं जलता था। इन्हें दूसरों की जूठन या बचा-खुचा खाना खाना पड़ता था। एक तरह से इनका जीवन 'बड़े लोगों' के घरों से जुड़ा था।

किसान, कारीगर या दलित परिवार ये नहीं सोच सकते थे कि केवल घर के वयस्क पुरुष उत्पादन का काम करे और महिलाएँ व बाकी लोग केवल खाना पकाना या साफ-सफाई का काम करें। भले ही पुरुष हल चलाए, लेकिन महिला को बीज बोने, रुपाई, निन्दाई-गुढ़ाई, कटाई, खाद फैलाने

चित्रः शुभम लखेरा

आदि कामों में हाथ बँटाना ज़रूरी था। भले पुरुष कुम्हार चका चलाए, पर महिला को मिट्टी लाना, उसे तैयार करना, मटके तैयार करना, पकाना आदि में मदद करना ज़रूरी था। बच्चे भी हर तरह के काम करते थे।

औद्योगीकरण के बाद यह सब बदल गया। अब उत्पादन बड़े-बड़े कारखानों में होने लगा, जहाँ पुरुष या महिला मज़दूरी के लिए काम करने लगे। किसानी भी बदलने लगी। पहले जहाँ घर की खपत के लिए उत्पादन होता था, अब अधिकांश उत्पादन बेचने के लिए होता है और लागत सब बाज़ार से खरीदी जाती है। बहुत से काम भी मशीनों द्वारा खेतों में हो जाते हैं, जैसे हार्वेस्टर से कटाई। बहुत से देशों में छोटे किसानों की जगह हज़ारों एकड़ के बड़े-बड़े फार्म बने जिनमें उत्पादन कारखानों जैसा ही होता था।

इन सब के चलते घर का स्थान उत्पादन में कम होता गया। अब घर को केवल रहने व खाने-पीने की जगह माना जाने लगा। अनाज या सामान के उत्पादन में महिलाओं व बच्चों की या फिर पालतू जानवरों की भूमिका भी कम होती गई। अब घर में जो उत्पादन होता है, जैसे खाना, शिक्षा, बीमारी में इलाज, साफ-सफाई, कपड़े धोना आदि, लोगों को काम ही नहीं लगता है। लोग उसी काम को काम मानते हैं जिससे पैसों में आमदनी हो। घर केवल मनुष्यों के उत्पादन का स्थान रह गया। यानी कि घर केवल बच्चों के पैदा होने, उनकी परवरिश, बाहर काम करने वाले वयस्कों की देखभाल, भोजन आदि की जगह बनकर रह गया। इस सबको वास्तव में उत्पादन मानना चाहिए, आखिर घर में पैदा की गई श्रम शक्ति को ही तो मज़दूर बाहर जाकर वेतन के लिए बेचता है।

घर के सामान के उत्पादन से अलग होने के कई परिणाम हुए - लोगों का अपने ही काम पर नियंत्रण खतम हो गया, काम के महत्व को पैसों में ही तोला जाने लगा, वगैरह-वगैरह। इन पर बात कभी और।

कपड़ा मिल में काम करती महिला कर्मचारी

अमेरिका के हज़ारों एकड़ के फार्म - इन भीमकाय कोठियों में अनाज रखा जाता है

एक सवाल तुम्हारे लिए, चुनिन्दा जवाब हम अगले अंक में छापेंगे।

तुम्हारे परिवार के सभी सदस्य बच्चे-बूढ़े, अम्मा-बाबा, भाई-बहन, दादा-दादी आदि परिवार के लिए कुछ न कुछ करते होंगे। तुम्हारी राय में घर पर ये सब जो भी काम करते हैं, उनके लिए इन्हें कितने पैसे मिलने चाहिए और क्यों?

यह रकम घर से बाहर जाकर कमाकर लाने वाले पैसों से कम है या ज़्यादा?

पहली बारिश का मतलब

रोहन चक्रवर्ती

तुम भी बनाओ

मार्बल्ड मिल्क पेपर

जुगाड़ - दूध, मध्यम आकार की प्लेट, कटोरी, रुई या कोई पतली लकड़ी का टुकड़ा, शैम्पू पानी, कागज़, वाटर कलर या पोस्टर कलर

1. कटोरी में एक चम्मच शैम्पू डालो और धीरे-धीरे 2-3 बूँद पानी मिलाओ।
2. प्लेट में एक कप दूध डालो।
3. अलग-अलग रंग लो। इनकी कुछ बूँदें दूध में जैसे मनचाहे वैसे डाल लो।
4. अब रुई या पतली लकड़ी के टुकड़े से शैम्पू के घोल को हलके से छुकर रंगों की बूँदों के बीच में रखो। रंग तुम्हें बिखरते हुए नज़र आएँगे।

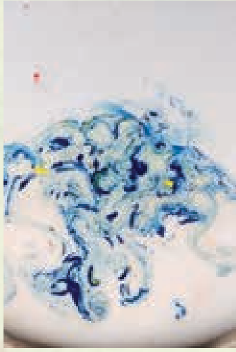

5. सारे रंगों के बिखरने के बाद प्लेट में ड्राइंग शीट या कागज़ को पानी के ऊपर रख दो। पाँच सैकण्ड में बाहर निकाल लो और पलटकर ज़मीन पर रख दो। कुछ मज़ेदार-सा हुआ?

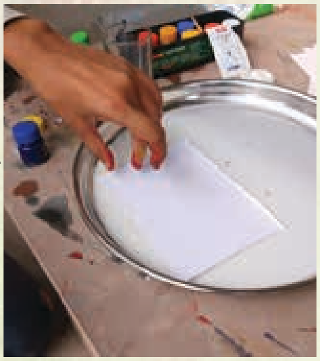

दो-तीन कागज़ को इस तरह रंगने के बाद तुम देखोगे कि पैटर्न बनने कम हो गए हैं। पर कुछ नया रंग तुम्हें दूध में उभरता नज़र आ रहा होगा। तो जब तक यह घोल खत्म नहीं होता है तब तक तुम इसमें बार-बार कागज़ डालते जा सकते हो। अन्त में हर एक कागज़ में तुम्हें कुछ नया दिखाई देगा।

nature
conservation
foundation
science for conservation

चूं-चूं करती...

पुराने दोस्त

गौरैया सदियों से हमारे घरों के आसपास फुदकते रहे हैं*। ये बिजली के खम्भों, छतों के खपरैल या छत में लगे पंखों में अपने घोंसले बनाते आए हैं। हमारी रसोई, आँगन, खेतों या सड़क के आसपास अपना भोजन तलाश करते आए हैं।

जब गौरैया घोंसला नहीं बना रहे होते हैं या नन्हे बच्चों की देखरेख नहीं कर रहे होते हैं, उस समय ये समूह में रहते हैं। ये बहुत शोर मचाते हैं और तरह-तरह की बोलियों का इस्तेमाल कर आपस में बातें करते हैं। ये चीं-चीं करते हैं, चहकते हैं और चटर-पटर भी करते हैं। जब ये परेशान होते हैं या इन्हें किसी खतरे का आभास होता है तो ये तेज़ आवाज़ में चिल्लाते भी हैं।

नर व मादा गौरैया के रंगों के पैटर्न अलग-अलग होते हैं। नर गौरैया का सिर (क्राउन) स्लेटी, गर्दन के नीचे का हिस्सा (बिब) काला और गाल सफेद होते हैं। इनकी पीठ गहरे भूरे रंग की होती है जिस पर काली धारियाँ होती हैं।

मादा गौरेया हल्के भूरे रंग की होती हैं। इनके ना तो स्लेटी क्राउन होता है, ना काला बिब और ना ही सफेद गाल।

* हम कहते हैं बाज़ शिकार करता है, गिद्ध उड़ता है, कौआ खाता है और गौरैया फुदकती है, जबकि हर किस्म की चिड़िया के नर और मादा दोनों होते हैं। ज़ाहिर है कि मादा कौआ खाती है और नर गौरैया फुदकता भी है।
यहाँ हम नर और मादा गौरैया दोनों की बात कर रहे हैं, इसलिए हमने लिखा है कि गौरैया फुदकते हैं।

फोटोग्राफ: दीपाली शुक्ला

फील्ड डायरी के लिए...

बाहर निकलो और घर से निकलने का समय डायरी में दर्ज कर लो।

ढूँढो, यदि तुम्हें एक या एक से ज़्यादा गौरैया दिखाई दें तो दर्ज कर लो कि तुमने उन्हें कहाँ देखा – सड़क पर, किसी बगीचे में, किसी अहाते की चारदीवारी पर, कूड़े के ढेर पर चुगते हुए – सबसे पहले तुमने उस समूह को कहाँ देखा?

गिनो कि समूह में कितनी गौरेया हैं? कुछ देर के लिए ध्यान से उस समूह को देखो। तुम्हें कितने नर व मादा दिखाई दिए? क्या तुम्हें नर गौरैया की गर्दन के नीचे काला रंग दिखा?

अन्य जानकारियों को दर्ज करना भी ज़रूरी है - जैसे जगह, तारीख, गौरैया को ढूँढने की अपनी सैर शुरू व खत्म करने का समय और अन्दाज़न तुमने कितनी दूरी तय की। (अगर तुम यह सैर हर हफ्ते करते हो तो इन सब बातों से तुम्हें यह पता चल सकता है कि गौरैया उस इलाके का किस तरह इस्तेमाल करते हैं)।

चौकन्नी, अपना सिर ऊँचा किए हुए

बच्चे को चुग्गा खिलाते हुए

यदि मैं कोई गौरैया नहीं ढूँढ पाऊँ तो?

यदि तुम्हें कोई गौरैया नहीं दिखे और केवल दूसरे पक्षी ही नज़र आएँ, तो यह भी बहुत महत्वपूर्ण जानकारी है। कई जगहों पर गौरैया की संख्या में तेज़ी-से कमी आ रही है। और इसीलिए, ना केवल यह जानना अच्छा है कि वो कहाँ दिखाई देते हैं, बल्कि यह जानना भी अच्छा है कि वो कहाँ दिखाई नहीं देते। गौरैया की संख्या में कमी आने के कई कारण हो सकते हैं – जैसे पहले की तुलना में घर बनाने के लिए जगह की कमी, बड़ों के लिए कम दाने व बच्चों के लिए कम कीट।

दो नर आक्रामक होते हुए

प्रतियोगिता

एक अन्धविश्वास के अनुसार, गौरैया का उड़कर घर में आना (खासतौर पर घर में घोंसला बनाना) एक शुभ संकेत माना जाता है। अपने परिवार के बुज़ुर्ग लोगों से पूछो कि क्या वे गौरैया के बारे में ऐसी कोई और धारणाएँ जानते हैं? यदि तुम्हें भी ऐसी किसी मान्यता के बारे में पता चले तो chakmak@eklavya.in पर हमें भेजो और पक्षियों को पहचानने की एक फील्ड गाइड जीतने का मौका पाओ।

अनुवाद: कविता तिवारी

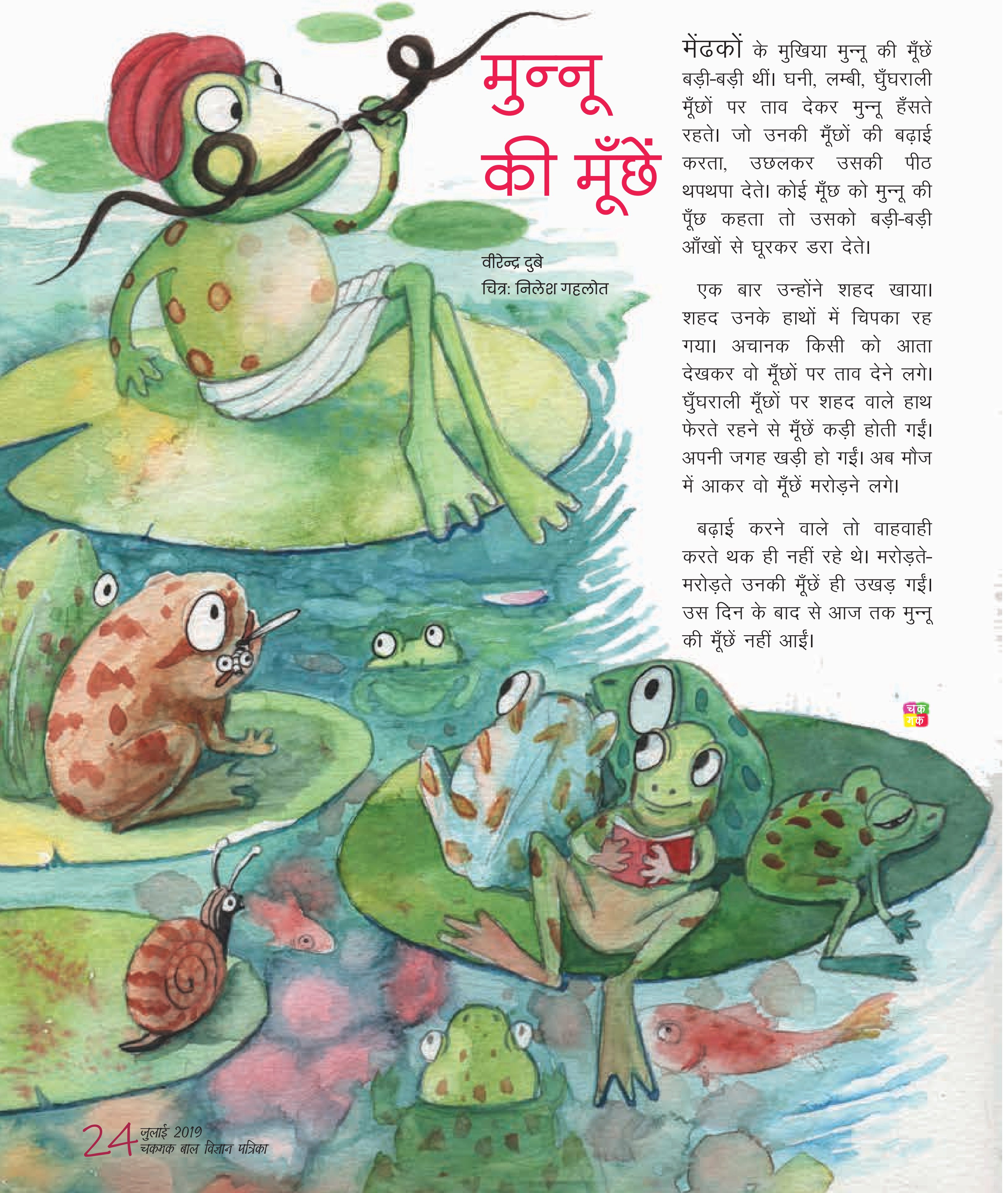

मुन्नू की मूँछें

वीरेन्द्र दुबे
चित्र: निलेश गहलोत

मेंढकों के मुखिया मुन्नू की मूँछें बड़ी-बड़ी थीं। घनी, लम्बी, घुँघराली मूँछों पर ताव देकर मुन्नू हँसते रहते। जो उनकी मूँछों की बढ़ाई करता, उछलकर उसकी पीठ थपथपा देते। कोई मूँछ को मुन्नू की पूँछ कहता तो उसको बड़ी-बड़ी आँखों से घूरकर डरा देते।

एक बार उन्होंने शहद खाया। शहद उनके हाथों में चिपका रह गया। अचानक किसी को आता देखकर वो मूँछों पर ताव देने लगे। घुँघराली मूँछों पर शहद वाले हाथ फेरते रहने से मूँछें कड़ी होती गईं। अपनी जगह खड़ी हो गईं। अब मौज में आकर वो मूँछें मरोड़ने लगे।

बढ़ाई करने वाले तो वाहवाही करते थक ही नहीं रहे थे। मरोड़ते-मरोड़ते उनकी मूँछें ही उखड़ गईं। उस दिन के बाद से आज तक मुन्नू की मूँछें नहीं आईं।

इन्सानों के आसपास रहने वाले जानवर

आलेख व चित्र - जितेश शेल्के व
कालू राम शर्मा

अपने आसपास गली-मोहल्लों, पार्क, बस-रेलवे स्टेशन व अन्य सार्वजनिक स्थानों, और तो और अपने घर में भी हम कुछ जन्तुओं को पाते हैं। कमरे में ट्यूबलाइट चालू करते ही छिपकली तेज़ी-से उड़ते हुए कीट पर झपट्टा मारती है। रसोईघर में कॉकरोच व मक्खी के दर्शन हो जाते हैं। यहाँ तक कि महानगरों की बड़ी-बड़ी इमारतों में और बस स्टेशन, रेलवे स्टेशन जैसी इन्सानी भीड़भाड़ वाली जगहों में भी तुम्हें कुछ जानवर मिल जाएँगे। ये जानवर मानवीय हरकतों के आदी हैं, लेकिन पालतू नहीं हैं।

तुम जानते ही हो कि गाय, कुत्ता, घोड़ा, भेड़, बकरी, ऊँट, मुर्गी, बत्तख, बिल्ली, सूअर आदि पालतू जानवरों की श्रेणी में आते हैं। ये ऐसे जीव हैं जिन्हें इन्सानों ने सभ्यता के विकास के साथ पालतू बनाया। इन्हें पालतू इसलिए बनाया क्योंकि इनसे दूध, अण्डे, बाल वगैरह मिलते हैं। इन्हें सवारी के, खेत जोतने के, खुद की सुरक्षा के काम लाया जा सकता है।

अपने घर-परिवार और आसपास पाए जाने वाले जानवरों को देखो। इनमें कितने जानवर पालतू हैं और उनसे हमें क्या-क्या मिलता है?

जंगली जानवर, इन्सानों से दूर रहना पसन्द करते हैं। पालतू और जंगली, इन दोनों श्रेणियों में तुम गहरा फर्क देख सकते हो। यह फर्क मानवीय हस्तक्षेप के आधार पर किए गए हैं। शेर, तेन्दुआ, हाथी, हिरण आदि जीव और तीतर, कठफोड़वा जैसे पक्षी केवल जंगलों में ही रहते हैं। इनमें से कुछ जैसे शेर, हाथी आदि सर्कस या चिड़ियाघर में भी मिल जाते हैं। मगर वहाँ इन्हें कैद करके रखा जाता है।

इन्सानों के आसपास रहने वाले जीवों की एक श्रेणी और है। इस श्रेणी में वो जंगली जीव हैं जो पालतू तो नहीं कहे जा सकते, मगर इन्सानों के करीब, निकटता से रह लेते हैं। जन्तुओं की ये प्रजातियाँ अवसर का फायदा उठाते हुए इन्सानी सभ्याताओं के साथ फलती-फूलती गईं और अपना भौगोलिक विस्तार भी करती गईं।

पालतू जानवरों की तरह इन जन्तुओं से हमें कुछ मिलता नहीं है। बल्कि इनमें से कुछ तो ऐसे हैं जो हमें काफी परेशान करते हैं या नुकसान पहुँचाते हैं। जैसे कि जूं, कॉकरोच, घरेलू मक्खी, मच्छर, चूहे आदि। गौरैया, मैना, नेवला आदि अनेक जीव भी इस समूह में शामिल हैं लेकिन ये हमें नुकसान नहीं पहुँचाते। इन्हें सिनैनथ्रोप कहते हैं। कुछ और सिनैनथ्रोप जीवों की सूची बनाकर हमें ज़रूर भेजना। इनमें तुम पेड़-पौधों को भी जोड़ सकते हो।

डिज़ाइन: इशिता देबनाथ बिस्वास

यहाँ कुछ ऐसे ही जानवरों की तस्वीरें प्रस्तुत हैं जो इन्सानों के आसपास आसानी से रह लेते हैं।

गौरैया हमारे आसपास ही बड़े मज़े से रहते हैं। भैंस पालतू पशु है। बगुला भैंस के बदन पर पाए जाने वाले कीड़ों को खाता है।

शहर में सड़कों पर सुबह-सुबह कौवे, मैना और गाय!

शहरों में प्रवासी चिड़िया, रोजी पेस्टर का जमावड़ा!

बन्दर कभी-कभी हमारे घरों की छतों पर आ जाते हैं। यह सार्वजनिक और धार्मिक स्थलों पर भी खूब दिखाई देते हैं। यहाँ इन्हें खाने को मिल जाता है।

मक्खी से तो हम सभी परिचित हैं। ये हमारे आसपास भिनभिनाती रहती है।

ऐसे अनेक उदाहरण तुम भी खोज सकते हो जहाँ जानवरों को पालतू तो नहीं बनाया जाता पर वे हमारे आसपास दिखते रहते हैं।

अभी तक तुमने पढ़ा -

गोपी और बाघा के गाने-बजाने से परेशान गाँववाले उन्हें गाँव से निकाल देते हैं। जंगल में दोनों की मुलाकात होती है। महाराज को अपना गाना-बजाना सुनाने निकले गोपी-बाघा को रास्ते में भूतों की टोली मिलती है, जो उन्हें एक जादुई थैली और दो जोड़ी जादुई जूते ईनाम में देती है। जूतों की मदद से दोनों सीधे महाराज के कमरे में पहुँच जाते हैं और पकड़े जाने पर कारागार से भी भाग निकलते हैं। फिर थैली से राजसी कपड़े माँगकर, पहनकर राजबाड़ी पहुँच जाते हैं। जहाँ महाराज दोनों को दूसरे देश का राजा समझ लेते हैं। लेकिन जब जब उनको समझ में आ जाता है कि ये वही दो भूत हैं जो कारागाह से भागे हैं तो उनको बागानबाड़ी में बन्द कर उसी रात को जलाने का निर्णय लेते हैं।

अब आगे...

उस दिन भोजन बड़ा अच्छा रहा। गोपी और बाघा ने सोचा कि लोगों के चले जाते ही वे गाना-बजाना शुरू करेंगे। दारोगाजी ने सोचा कि गोपी और बाघा के सोते ही वे आग लगवाएँगे। वे बड़ी कोशिश करने लगे कि वो दोनों सो जाएँ। जब दारोगाजी के हावभाव से उन दोनों को यह स्पष्ट हो गया कि उनके न सोने तक वे वहाँ से जाएँगे नहीं, तो गोपी बाघा के साथ बिस्तर पर लेटकर खर्राटे भरने लगा।

कुछ देर में गोपी और बाघा ने देखा कि सब लोग चले गए थे, कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। थोड़ी देर और इन्तज़ार के बाद जब लगा कि बागीचा बिलकुल खाली हो गया है, तब दोनों बरामदे में आए और ढोल बजाकर गाना शुरू कर दिया।

इसी बीच दारोगाजी ने अपने लोगों से कहा, "तुम सब हर दरवाज़े पर अच्छी तरह आग लगाओगे; खबरदार, अच्छी तरह आग लगने से पहले कोई वापस मत लौटना।" वे खुद सीढ़ियों पर आग लगाने गए। अच्छी-खासी आग लग गई। दारोगाजी सोच ही रहे थे कि अब भाग चलें। ठीक उसी वक्त बाघा का ढोल बज उठा, गोपी ने गाना शुरू कर दिया। अब दारोगाजी और उनके लोगों के लिए भागना सम्भव न था, सबको जलकर मरना पड़ा। इसी बीच आग भड़कती देखकर, गोपी और बाघा भी अपने जूते पहन, ढोल और थैला लिए वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गए।

उस दिन की आग में दारोगाजी तो जलकर मरे ही थे, उनके साथ आए लोगों में बहुत कम ही बच पाए थे। जब उन लोगों ने जाकर महाराज को इस घटना की खबर सुनाई तो उन्हें बड़ी घबराहट हुई। दूसरे दिन और दो-चार लोग राजसभा में आए और बोले कि वे आग का तमाशा देखने वहाँ गए थे; तब उन्होंने बड़ा अजीब-सा संगीत सुना और दोनों भूतों को अपनी आँखों से शून्य में उड़ जाते देखा। यह सुनकर राजाजी तो यूँ काँपने लगे कि उस दिन बेचारे सभा में बैठ न सके। जल्दी से महल के अन्दर आकर भूत के डर से दरवाज़े बन्द कर रजाई में छिपकर साँस लेते रहे। फिर एक महीने तक बाहर नहीं निकले।

भाग - 5

गोपी गवैया बाघा बजैया

उपेन्द्रकिशोर रायचौधरी
अनुवाद: लाल्टू
चित्र: शिवात्मिका लाला

इधर गोपी और बाघा उस आग में से निकल भाग अपने घर के पास उस जंगल में आकर उतरे, जहाँ वे पहली बार एक-दूसरे से मिले थे। इतनी घटनाओं के बाद अपने माता-पिता से मिलने के लिए उनका जी मचलने लगा। जंगल में आते ही बाघा बोला, "गोपी भैया, यहाँ हमारी पहली मुलाकात हुई थी न?" गोपी बोला, "हाँ।" बाघा बोला, "तो ऐसी जगह आकर बिना गाना-बजाना किए चले जाना क्या ठीक होगा?" गोपी बोला, "ठीक कहा भैया। तो फिर अब देर क्यों करें? अभी शुरू कर दो।" यह कहकर वे जी खोलकर गाने लगे।

इसी बीच एक आश्चर्यजनक घटना हुई। डाकुओं का एक गिरोह हाल्ला-नगरी के राजा का खज़ाना लूट, उसके दो छोटे बच्चों को चोरी कर भागकर इस ओर आ रहा था। राजा कई सिपाहियों सहित उनका जी-जान से पीछा करते हुए भी उन्हें पकड़ नहीं पा रहे थे। गोपी और बाघा जब गा रहे थे, उसी वक्त वे डाकू भी वन में से होकर गुज़र रहे थे। लेकिन वह गाना एक बार सुनने पर उसे अन्त तक सुने बिना चले जाने का कोई उपाय न था, इसलिए डाकुओं को वहाँ रुकना पड़ा। सारी रात वह गाना-बजाना भी न रुका और डाकू भी वहाँ से निकल न पाए। सुबह हाल्ला के राजा ने आकर बड़ी आसानी से उन्हें पकड़ लिया। इसके बाद जब उन्हें पता चला कि गोपी और बाघा के संगीत के गुण से ही उन्होंने डाकुओं को पकड़ा, फिर तो उनकी सेवा का कोई अन्त नहीं रहा। राजकुमारों ने भी कहा, "पिताजी, ऐसा अद्भुत संगीत हमने पहले कभी नहीं सुना, इनको साथ ले चलो।" इसलिए राजा ने गोपी और बाघा को कहा, "तुम लोग हमारे साथ चलो। तुम्हें पाँच सौ रुपये महीने की तनख्वाह मिलेगी।"

यह सुनकर गोपी ने हाथ जोड़कर राजाजी को नमस्कार किया और कहा, "महाराज, कृपया हमें दो दिनों के लिए छुट्टी दें। हम अपने माता-पिता से मिलकर उनकी अनुमति लेकर आपकी राजधानी में आ जाएँगे।" राजा बोले, "अच्छा, अगले दो दिन हम इस वन में ही आराम करेंगे। तुम लोग अपने माँ-बाप से मिलकर दो दिनों बाद हम से यहीं मिलो।"

गोपी को निकाल भगाने के बाद से उसका पिता उसके लिए बड़ा ही दुखी था, इसलिए उसे लौटते देख उसे बड़ी खुशी हुई। पर बेचारे बाघा के भाग्य में यह सुख नहीं था। उसके माता-पिता कुछ दिनों पहले मर चुके थे।

गाँव के लोगों ने जब उसे सिर पर ढोल लेकर आते देखा तो कहा, "अरे रे! वह साला बाघा लौट आया है, फिर हमें परेशान कर छोड़ेगा, मारो साले को!" बाघा ने नम्रतापूर्वक कहा, "मैं सिर्फ अपने माँ-बाप से मिलने आया हूँ; दो दिन ठहरकर चला जाऊँगा, बजाऊँगा-वजाऊँगा नहीं।" पर यह बात सुने कौन? उन्होंने दाँत पीसकर उसे माँ-बाप की मौत की खबर सुनाई और वे लाठियाँ लेकर उसे मारने आए। वह जी-जान बचाकर दौड़ा। लेकिन उन्होंने पत्थर मार-मार उसके पैर तोड़ दिए, सिर फोड़ दिया और वह खून से लथपथ हो गया।

गोपी अपने घर के आँगन में बैठ अपने पिता के साथ बातचीत कर रहा था, तभी उसने देखा कि बाघा पागलों-सा लँगड़ाते-लँगड़ाते दौड़ते हुए आया। उसके कपड़े फटकर चीथड़े हो गए थे और खून से लाल हो गए थे। वह तुरन्त दौड़कर बाघा के पास गया और पूछा, "यह क्या हुआ? तुम्हारी ऐसी हालत कैसे हुई?" गोपी को देखते ही बाघा खूब मुस्कराया। फिर उसने हाँफते हुए कहा, "भैया, किसी तरह बचकर आया हूँ! ज़रा देर और होती तो बेवकूफों ने मेरा ढोलक ही तोड़ देना था!" गोपी के घर पर गोपी की देखभाल और उसके माँ-बाप के प्यार से बाघा के दो दिन जितना हो सके, सुखपूर्वक ही बीते। दो दिनों बाद गोपी अपने माँ-बाप से विदा लेते हुए कह गया, "तुम लोग तैयार रहना। मुझे फिर छुट्टी मिलते ही मैं तुम्हें ले जाऊँगा।"

उसके बाद कई महीने बीत गए। गोपी और बाघा अब हाल्ला के राजा के घर बड़े सुखपूर्वक रहने लगे। देश-विदेश में उनका नाम फैल चुका था - "ऐसे उस्ताद कभी नहीं हुए, होंगे भी नहीं!" राजाजी उनको बड़ा प्यार करते। उनके गीत सुने बिना एक दिन भी नहीं रह सकते। अपने सुख-दुःख की बातें सब गोपी को बतलाते। एक दिन गोपी ने देखा कि राजाजी के चेहरे पर बड़ी उदासी छाई हुई है। वे लगातार किसी सोच में डूबे जा रहे हैं, जैसे वे किसी बड़ी विपदा में हों।

आखिर उन्होंने गोपी से कहा, "गोपी! बड़ी मुसीबत में पड़ गया हूँ, पता नहीं क्या होगा। शुंडी-नगर का राजा मेरा राज्य छीनने आ रहा है।" शुंडी का राजा वही था, जिसने गोपी और बाघा को जलाकर मारना चाहा था। उसका नाम सुनते ही गोपी के दिमाग में एक बढ़िया चाल सूझी। उसने राजाजी से कहा, "महाराज ! आप इसकी चिन्ता न करें, आप इस गुलाम को हुक्म दें, मैं इसे एक मज़ाक बनाकर छोड़ूँगा।" राजा ने हँसकर कहा, "गोपी, तुम गवैये-बजैये हो, जंग-लड़ाई के पास नहीं फटकते, इसके बारे में तुम क्या समझोगे? शुंडी के राजा की सेना बहुत बड़ी है, मैं उसका क्या बिगाड़ सकता हूँ?" गोपी बोला, "महाराज, हुक्म हो तो एक बार कोशिश कर सकता हूँ। कोई नुकसान तो नहीं है।" राजा बोले, "जैसी तुम्हारी मर्ज़ी, तुम कर सकते हो।" यह सुनकर गोपी खुशी से फूला न समाया, उसने बाघा को बुलाया और सलाह-मशविरा शुरू किया।

गोपी और बाघा उस दिन बड़ी देर तक सोच-विचार करते रहे। बाघा जोश से भरपूर था। वह बोला, "भैया, अब हम दोनों मिलकर कुछ न कुछ करके ही रहेंगे। मुझे बस एक बात का डर है। अगर अचानक जान बचाकर भागने की ज़रूरत हो, तो शायद मैं जूतों की बात भूलकर आम लोगों की तरह दौड़ने लगूँगा और फिर मुझे बुरी तरह मार पड़ेगी। याद है, कैसे उस बार हमारे गाँव के बेवकूफों ने मेरा हुलिया ही बिगाड़ दिया था!"

खैर, गोपी के समझाने पर बाघा का डर कम हुआ। दूसरे दिन से उन्होंने काम शुरू किया। कुछ दिनों तक वे रोज़ रात को शुंडी जाते रहे, और राजबाड़ी के आसपास घूमकर वहाँ की खबरें इकट्ठी करते रहे। जंग का जैसा इन्तज़ाम उन्होंने देखा, वह बड़ा भयंकर था; ऐसा इन्तज़ाम लेकर अगर हाल्ला में जा पहुँचें, तो बचना मुश्किल है। राजा के मन्दिर में रोज़ धूमधाम से पूजा हो रही है। दस दिनों तक इस तरह पूजा करने के बाद देवता को खुश कर वे हाल्ला-नगर को रवाना होंगे।

जारी...

विंग कमाण्डर के टी सुधीर

दुर्घटनाओं की जाँच-पड़ताल

आए दिन होने वाली कई रेल या विमान दुर्घटनाओं के बारे में तुमने पढ़ा-सुना होगा। जब भी ऐसी कोई दुर्घटना होती है तो सबसे पहले दो सवाल हमारे दिमाग में आते हैं। पहला यह, कि कितने लोग मरे और दूसरा, दुर्घटना कैसे हुई। दूसरे सवाल का जवाब खोजने के लिए दुर्घटना की जाँच-पड़ताल करना ज़रूरी होता है। यह इसलिए भी ज़रूरी होता है कि दुर्घटना के कारणों को जानकर सुधार किया जा सके, ताकि ऐसा दुबारा ना हो।

क्या तुमने कभी सोचा है कि जाँच-पड़ताल का यह काम किया कैसे जाता है? जाँच-पड़ताल के आदेश जारी करना जितनी आम बात है, यह काम उतना ही खास है। इसके लिए जाँच-पड़ताल करने वालों को दुर्घटना में शामिल उपकरणों, उनके रखरखाव, तकनीक आदि की अच्छी जानकारी होना ज़रूरी होता है। उन्हें जानकारियों को इकट्ठा कर सूझबूझ से उनका विश्लेषण करना होता है। इसके लिए बहुत सारे धैर्य की भी ज़रूरत होती है। चलो, मैं ऐसी एक विमान दुर्घटना की जाँच-पड़ताल के बारे में तुम्हें तफसील से बताता हूँ।

'किरण' ऐक्सीडेंट

1973 में एक घातक दुर्घटना हुई जिसमें 'किरण' विमान शामिल था। पायलेट एक फ्लाइट लेफ्टिनेंट थे और यातायात विमान (ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट) से लड़ाकू विमान के पायलेट बनने जा रहे थे। उन्हें लगभग 4000 घण्टों की उड़ान भरने का अनुभव था। साथ ही उन्हें खराब मौसम में विमान उड़ाने के लिए ग्रीन रेटिंग भी मिली थी। इस रेटिंग को पाने के लिए विमान के बाहर देखे बिना, सिर्फ विमान के उपकरणों पर निर्भर होकर विमान उड़ाना पड़ता है।

उस दिन उन्हें सोलो एरोबेटिक्स यानी कि अकेले हवाई करतब करने की मंजूरी दी गई थी। जिस क्षेत्र में उन्हें उड़ान भरनी थी, वहाँ इधर-उधर बादल दिख

रहे थे। एरोबेटिक्स के दौरान उन्हें बादलों से बचकर रहने को कहा गया था। उड़ान के दौरान एक समय एटीसी (एयर ट्रैफिक कंट्रोलर) का रेडियो ट्रांसमिटर पर विमान से सम्पर्क टूट गया। थोड़ी ही देर बाद स्टेशन पर यह सूचना मिली कि स्थानीय उड़ान क्षेत्र में एक विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया है। बचाव दल घटनास्थल पर पहुँचा तो पाया कि विमान के परखच्चे उड़ गये थे और उसके टुकड़े एक बड़े क्षेत्र में फैले हुए थे। पायलेट का बुरी तरह से क्षत-विक्षत शव उसी क्षेत्र में मिला था। जाँच के लिए एक दल बनाया गया जिसमें मैं तकनीकी सदस्य के रूप में शामिल था।

एक्सीडेंट की तहकीकात

घटनास्थल पर मलबे के वितरण व इंजन की स्थिति से साफ़ ज़ाहिर था कि जब विमान ज़मीन से टकराया वह घूम रहा था और उसका इंजन चालू था। फिर हमने चश्मदीद गवाहों को तलाशना शुरू किया। कुछ गाँववालों ने विमान को अपने ऊपर उड़ते देखा था। लेकिन उन्होंने विमान पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। उनका कहना था कि वहाँ पर बादल थे और विमान बादलों के बीच में उड़ रहा था।

एक व्यक्ति ने तफसील से बताया। उसने बताया कि उसने विमान को तेज़ गति से नीचे आते हुए देखा। फिर विमान तेज़ी-से नीचे, और तेज़ी-से ऊपर की ओर जाने लगा। फिर विमान एक विशाल बादल में चला गया और कुछ समय के लिए वह उसे दिखाई नहीं दिया। और फिर उसने विमान को लगभग लम्बवत नीचे की ओर आते हुए, पूरे समय घूमते-मुड़ते देखा। अपने हाथों के इशारों और शब्दों के ज़रिए उसने विमान के घुमावदार उतार (स्पिन) को बहुत अच्छी तरह बताया। मैं कई बार जाँच दल का सदस्य रह चुका था। लेकिन मैंने पहले कभी किसी ऐसे व्यक्ति, जो वायुसेना या उड़ान से ना जुड़ा हो, को किसी विमान दुर्घटना का इतना स्पष्ट विवरण बताते हुए नहीं सुना था। उस व्यक्ति के बयान से यह स्पष्ट हो गया था कि हादसा ज़मीन से टकराकर हुआ था।

क्या हुआ होगा - हमारी रिपोर्ट

बादलों में विमान उड़ाने का अनुभव होने से शुरुआत में पायलेट को सहज महसूस हुआ होगा। लेकिन फिर उसने लूप या रिंग बनाई। यानी कि उसने एक पूरा लम्बवत वृत्त बनाया - एक बिन्दु पर लम्बवत ऊपर उड़ना, सबसे ऊपर जाकर उल्टा हो जाना, फिर किसी दूसरे बिन्दु से लम्बवत नीचे जाना। बादलों के कारण कोई सन्दर्भ बिन्दु न मिलने से वह गुमराह हो गया होगा। विमान पूरे समय उच्च दबाव (पॉजिटिव 'g') की स्थिति में रहा होगा जिसके कारण उसकी सहजबुद्धि व अनुभव भी उसके काम नहीं आए होंगे। और लूप के शीर्ष पर, जब गति सबसे कम रहती है, विमान स्टॉल हो गया होगा, यानी कि उसका इंजन रुक गया होगा। कोई बाहरी सन्दर्भ बिन्दु न होने से पायलेट स्पिन को ठीक करने में सक्षम नहीं रहा होगा। जब वह बादल से बाहर आया होगा, जहाँ बाहरी सन्दर्भ बिन्दु मौजूद थे, तो उसके पास सही स्थिति में आने की कार्यवाही करने के लिए पर्याप्त ऊँचाई नहीं रही होगी। समस्या को समझने में उसे इतनी देर हो गई होगी कि अपनी जान बचाने के लिए वह इजेक्शन सीट का इस्तेमाल भी नहीं कर पाया होगा।

के टी सुधीर - भारतीय वायु सेना की टेक्निकल ब्रांच में कार्यरत थे। उन्होंने फाइटर विमान के रखरखाव का कार्य किया है। फील्ड के अनुभव हासिल करने के बाद हादसों/घटनाओं की जाँच के लिए उनकी नियुक्ति हुई। वे पायलेट व टैस्ट इंजीनियर भी रह चुके हैं।

बीमारियों को सूँघने के लिए इलेक्ट्रॉनिक नाक

यह तो जानी-मानी बात है कि कुत्तों की सूँघने की क्षमता ज़बरदस्त होती है। मगर जिस इलेक्ट्रॉनिक नाक (ई-नाक) की बात यहाँ हो रही है वह कुत्तों को सूँघने का काम करती है। यह ई-नाक खासतौर से 'लेश्मानिएसिस' नामक रोग से ग्रस्त कुत्तों को पहचानने के लिए विकसित की गई है। इस रोग को भारत में कालाज़ार या दमदम बुखार के नाम से भी जाना जाता है।

यह रोग कुत्तों और इन्सानों में 'लेश्मानिया' परजीवियों की वजह से फैलता है। इन परजीवियों के वाहक मक्खियों की कुछ किस्म हैं, जिन्हें सैंड फ्लाई कहते हैं। मनुष्यों में इस रोग के लक्षण हैं - वज़न घटना, अंगों में सूजन, बुखार वगैरह। कुत्तों में दस्त, वज़न घटने और त्वचा की तकलीफें दिखाई देती हैं। यह रोग ब्राज़ील में ज़्यादा पाया जाता है और इसका प्रकोप लगातार बढ़ रहा है। लेश्मनिया का इलाज तो है लेकिन यह हमें काफी नुकसान पहुँचाता है - सेहत की दृष्टि से भी और आर्थिक रूप से भी। कुछ डॉक्टर कहते हैं कि मलेरिया के बाद यह हमारे लिए सबसे खतरनाक बीमारी है।

तो, ई-नाक नाक पर वापिस आते हैं। ई-नाक दरअसल एक उपकरण है। हवा में वाष्पशील रसायनों का विश्लेषण कर यह उन्हें 'सूँघ' सकता है। फिलहाल लेश्मानिएसिस की जाँच का जो तरीका है उसमें समय लगता है। ई-नाक इसमें मददगार हो सकती है।

पिछले दिनों लेश्मानिया से पीड़ित 16 कुत्तों और 185 अन्य कुत्तों के बालों के नमूनों पर एक प्रयोग किया गया। इन बालों को एक पानी भरी थैली में रखकर गर्म किया गया ताकि इनमें उपस्थित वाष्पशील रसायन वाष्प बन जाएँ। इसके बाद प्रत्येक नमूने का विश्लेषण ई-नाक द्वारा किया गया। ई-नाक ने लेश्मानिएसिस पीड़ित कुत्तों की पहचान 95 प्रतिशत सही की। अब इसे और सटीक बनाने के प्रयास चल रहे हैं। कुत्तों में इस बीमारी को पहचानना इसलिए ज़रूरी है क्योंकि सैंड फ्लाई लेश्मानिया परजीवी को इन्सान से दूसरे इन्सान तक ही नहीं, बल्कि कुत्तों से इन्सानों में भी फैलाते हैं।

वैज्ञानिकों का मानना है कि जल्दी ही ई-नाक रोग निदान का एक उम्दा उपकरण साबित होगी। उम्मीद तो यह है कि इसका उपयोग मलेरिया, मधुमेह जैसे अन्य रोगों की पहचान में भी किया जा सकेगा।

स्रोत फीचर्स से साभार

शिक्षक-प्रशिक्षक की भूमिका में अवसर

Azim Premji Foundation

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन विभिन्न राज्यों में अपने जिला संस्थानों में कार्य करने हेतु शिक्षक प्रशिक्षक पद के लिए आवेदन आमंत्रित कर रहा है।

शिक्षक प्रशिक्षक की भूमिका: सरकारी स्कूलों की प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं में अध्यापन कर रहे शिक्षकों का सतत् क्षमता संवर्धन।

आवश्यक योग्यता: स्नातक / स्नातकोत्तर

अनुभव: किसी प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, महाविद्यालय या अन्य शिक्षण संस्थानों में कम से कम दो वर्ष के शिक्षण कार्य का अनुभव अनिवार्य।

नोट - पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त लोगों के लिए अनुभव आवश्यक नहीं है।

शिक्षा से जुड़ी गैर सरकारी संस्थाओं में कार्यानुभव रखने वाले व्यक्ति भी आवेदन कर सकते हैं। कम से कम दो वर्ष का फील्ड में कार्य करने का अनुभव आवश्यक।

चयन प्रक्रिया: लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार

परीक्षा तिथि: 21 जुलाई

इच्छुक अभ्यर्थी निम्न वेबलिंक पर अपना पंजीकरण (ऑनलाइन) कर सकते हैं।

https://bit.ly/2Mx2kwb

अधिक जानकारी के लिए https://azimpremjifoundation.org/career-list एवं टोल फ्री नंबर-18002740101 (सोमवार-शुक्रवार, 9 A.M. - 6 P.M.) पर संपर्क कर सकते हैं।

मेरी ईद

मोहम्मद साकिब, छटवीं
पूर्व. मा. विद्यालय मऊ – 1
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

इस बार रमज़ान के बाद जब ईद आने वाली थी तो मुझे अच्छा लग रहा था कि इतने दिनों बाद ईद आई है। मैं खुशी से पागल हो रहा था कि कल ईद है। ईद के लिए मैंने 150 रुपए इकट्‌ठे किए हैं जिन्हें कल मैं खर्च करूँगा। कल आज हो गया। मैं अभी नहा-धोकर नए-नए कपड़े पहनकर ईद के मेले में जाऊँगा। वहाँ खिलौने खरीद लूँगा और आइसक्रीम खाऊँगा। मैं अपने दोस्तों के साथ जाऊँगा। अम्मी, आपके पास मेरे 150 रुपए हैं। आप मुझे दे दीजिएगा। अम्मी, ईद के मेले के बाद मैं अपने घर अपने दोस्तों को लाऊँगा, इसलिए आप सेवइंयाँ बना लीजिए।

चित्र: आबिद, गोविन्दगढ़, पीसांगन, राजस्थान

मेरा पन्ना

चित्र: चिन्मय बरुआ, आठवीं, देयोडी अति सीनियर बेसिक स्कूल, माजुली, असम

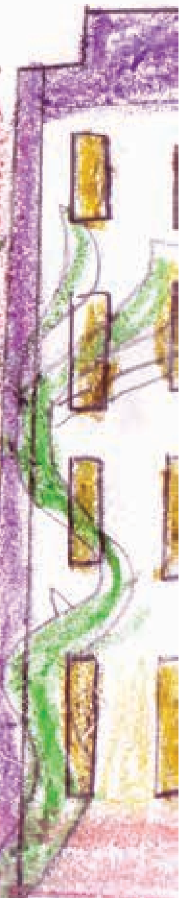

अच्छा नहीं लगता

रितु, दसवीं, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिसैया
खटीमा, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

बात उस समय की है, जब मैं कक्षा चार में पढ़ती थी। उस समय मुझे टीवी देखने का बहुत शौक था। टीवी देखने को लेकर मेरी माँ से अकसर कहा-सुनी हो जाया करती थी। एक दिन माँ बहुत गुस्से में आ गईं और मुझे जोर-जोर से डाँटने लगीं। उनकी उस फटकार के बाद मैंने निश्चय कर लिया कि अब मैं कभी टीवी को हाथ तक नहीं लगाऊँगी। मैं भी उनसे नाराज़ हो गई और पूरे दिन मैंने अपनी माँ से बात नहीं की। मेरी माँ मुझे बात-बात में डाँटती क्यों हैं और हर बात में रोक-टोक क्यों करती हैं? यह बात मुझे बिलकुल भी अच्छी नहीं लगती है।

चित्र: अलफाज फारुक काझी, दूसरी, जिला परिषद प्रायमरी स्कूल, नाझरा, सोलापुर, महाराष्ट्र

नानी की वो चाय

पुष्पा दसाणा, पाँचवीं
राष्ट्रीय प्राथमिक विद्यालय,
सागनेरिया, राजसमन्द, राजस्थान

एक बार मैं जंगल में घास काटने अपनी मम्मी और बड़ी बहन के साथ गई थी। बारिश का मौसम था। वहाँ जाते ही बारिश आ गई थी। हम भीगने से बचने के लिए एक पेड़ के नीचे खड़े हो गए। फिर भी हम भीग गए। मैं तो उस दिन पहले-पहले जंगल में घास काटने गई थी। लेकिन शुरुआत में ही भीग गई थी। उस दिन मेरी नानी भी घर आई हुई थीं। मैं पूरी भीग गई थी। मुझे ज़ुकाम हो गया था। मेरी नानी ने मुझे अदरक वाली चाय बनाकर पिलाई। और अगली सुबह तक मैं ठीक हो गई।

मछली रानी

करन, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय राजापुर, बी.के.टी.
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

एक दिन हम और पापा
गए पकड़ने मछली
सुबह से हो गई शाम
हाथ न आई मछली
तालाब गया था सूख
मछली गई थी रूठ
पापा बोले, अब घर कैसे जाएँगे
आज तो मम्मी से खूब फटकार खाएँगे

ऐसा क्यों?

मोहिनी अहिरवार, आठवीं, शासकीय माध्यमिक
शाला,मकरोनिया, सागर, मध्य प्रदेश

ऐसा क्यों होता है कि ज़्यादातर मम्मी-पापा भैया को ज़्यादा प्यार करते हैं। अगर भैया खेलने बिना बताए बाहर जाए तो मम्मी-पापा उसके लिए गुस्सा नहीं होते, लेकिन मैं बिना बताए खेलने जाऊँ तो मम्मी-पापा मुझे डाँटते हैं। जब भैया की गलती होती है तब भी मम्मी-पापा मुझे ही डाँटते हैं, भैया को नहीं। जब वो किसी चीज़ के लिए बोलता है कि वो ले दो तो जल्दी से ले देते हैं और जब मैं बोलती हूँ तो मना कर देते हैं। जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं, मम्मी की टोकाटाकी बढ़ती जाती है, ‘यह मत कर, वो मत कर। यहाँ मत जा, वहाँ मत जा।’ ऐसा नहीं है कि भैया हमारे बुरे हैं लेकिन मम्मी-पापा जितना प्यार आप भैया से करते हो, उतना प्यार हमसे भी करो।

मन्दिर की घटना

नवीन चन्द्र भट्ट, पाँचवीं
राष्ट्रीय प्राथमिक विद्यालय
बनलेख, चम्पावत
उत्तराखण्ड

एक दिन मन्दिर में कोई उत्सव था। वहाँ कई लोग जा रहे थे। मेरा दोस्त भी जा रहा था। उसने कहा, 'तू भी आ।' मैंने कहा 'नहीं।' वह ज़बरदस्ती कर रहा था। फिर मैंने मम्मी से पूछा और उसने भी पूछा तो मम्मी ने कहा, 'जाना, पर अच्छे से रहना।' फिर मैंने कपड़े पहने। मेरा दोस्त दादी से धनिया माँग रहा था। उसने कहा, पॉलीथीन दे। मैंने उसको पॉलीथीन दी और हम चले गए। हमने बनलेख से कुछ खरीदा और खाया। फिर हमने कौला पहुँचकर कैरम खेला और मेरे दोस्त ने अपने पापा को धनिया दिया। उसके पापा ने कहा कि मैंने तो धनिया ज़्यादा लाने को कहा था। तो उसने कहा कि ज़्यादा नहीं था। उन्होंने कहा, 'कुछ नहीं होता, इतने से ही काम हो जाएगा।' फिर मैंने खेल खेला और चाची के घर गया। फिर रात हो गई थी। रात को मेरा दोस्त संजय और मैं चप्पल वाला खेल खेल रहे थे तो संजय की चप्पल नीचे गिर गई। फिर हमने दीपक के पापा से टॉर्च माँगी। उन्होंने टॉर्च देकर पूछा, 'क्यों चाहिए?' हमने कहा चप्पल खो गई है। फिर हमने ढूँढी तो चप्पल मिल गई। और हम घर आकर चुपचाप सो गए।

चित्र: सई पी. जोशी, छटवीं, बाल भवन, वड़ोदरा, गुजरात

चित्र: संवित शर्मा, दूसरी, महराज सवाई भवानी सिंह स्कूल, जयपुर, राजस्थान

भोजपुर के बन्दर

भोजपुर के अन्दर
लाखों हैं बन्दर
जाओ तो अन्दर
निकलेंगे बन्दर
खाओ जो चुकन्दर
तो छीनते हैं बन्दर
भोजपुर के अन्दर
बन्दर हैं सिकन्दर

उमेश कुमार सिंह, अरण्यावास
भोपाल, मध्य प्रदेश

चित्र: शिवात्मिका लाला

माथापच्ची

1. तुम्हें इसमें कितनी संख्याएँ दिख रही हैं?

2. जसमीत के टोस्टर में 2 डबलरोटियाँ एक-एक तरफ से एक साथ सिक जाती हैं और इसमें केवल 1 मिनट लगता है। नाश्ते के लिए तीन टोस्ट बनाने में उसे कम से कम कितना समय लगेगा?

3. इवा ने गेंद को इस तरह फेंका कि वह 10 मीटर की दूरी तय करने के बाद भी बिना किसी चीज़ से टकराए उसके पास वापिस आ गई। यह कैसे हो सकता है?

4. अर्शी की अम्मी ने गणित पर एक किताब लिखी। एक दिन उन्होंने गलती से किताब के अन्दर 200 रुपए रख दिए और भूल गईं। कुछ दिनों बाद उन्होंने वह किताब अपने पास की एक लाइब्रेरी में दे दी। कई सालों बाद एक दिन वो लाइब्रेरी गईं अपनी किताब देखने। उन्हें किताब मिल गई और उसमें रखा अपना 200 रुपए का नोट भी। पर यह देखकर वो उदास हो गईं, भला क्यों?

5. नीचे दिए गए शब्दों की हरेक सीरिज में तुम्हें कोई एक ऐसा शब्द जोड़ना है जिससे कि तीनों शब्द सार्थक हो जाएँ। जैसे: .....झड़, ...वार, ...लून में 'पत' जोड़ने पर 'पतझड़', 'पतवार', 'पतलून' बनेगा।

- ......वट, ...तल, ...धनी
- ......कनी, ...सन, ...चित्र
- ....गद, ...सात, ...तन
- ....गम, ...कस, ...हद

फटाफट बताओ -

क्या है जिससे आग नहीं लगती फिर भी उसे बुझाना पड़ता है? (प्यास)

एक महल के दो दरवाज़े, खुलते एक ही संग
कमरा नहीं, पर माल रखा है सुरक्षित अत्यन्त (सीप)

दर पर तेरे बैठा हूँ, करने को रखवाली
बोलो भैया क्या तुम ले गए, मेरी संगी-साथी (ताला-चाबी)

		1	2	7		8		9
	5	9				7	2	
7				9	4			
	9		4		3		5	
	1	7				3	6	
2			7		1			8
				3	7	9		
9	6						7	5
1		8	9	5				3

सुडोकू-21

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय हमें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

माथापच्ची जवाब

1. संख्याएँ हैं...

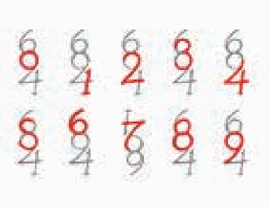

2. 3 मिनट, सबसे पहले वो दो डबलरोटियाँ टोस्टर में रखेगा। 1 मिनट में दोनों डबलरोटियाँ एक तरफ से सिक जाएँगी। फिर वह एक डबलरोटी को निकालकर उसकी जगह तीसरी डबलरोटी लगा देगा। और दूसरी वाली डबलरोटी को पलटकर रख देगा। अगले 1 मिनट में यह दोनों सिक जाएँगी। अब वो एक तरफ से सिकी डबलरोटी को पलट कर रख देगा। और दोनों तरफ से सिक चुकी डबलरोटी को निकालकर उसकी जगह पहले से एक तरफ सिकी डबलरोटी रखेगा और अगले एक मिनट में वो भी सिक जाएँगी।

3. उसने गेंद ऊपर की ओर उछाली थी।

4. क्योंकि 200 रुपए का नोट किताब के अन्दर ही था इसलिए वो समझ गईं कि किसी ने उनकी किताब नहीं पढ़ी और इसलिए वो उदास हो गईं।

5. कर, पट, बर, सर

गणित है मज़ेदार: उत्तर

क्रम 4. 22, क्रम 5. 216

भूल-सुधार

जून अंक की पृष्ठ 43 पर दिए गए चित्रपहेली में: (1) ऊपर से नीचे का नम्बर 3 का शब्द था जाल। ये ऊपर से नीचे का नम्बर 1 होना चाहिए था। (2) ऊपर से नीचे नंबर 21 का शब्द था डोरा। ये ऊपर से नीचे का नम्बर 24 होना चाहिए था। (3) ऊपर से नीचे नम्बर 24 जवाब था कैरम। यह ऊपर से नीचे का नम्बर 21 होना चाहिए था।

भूलभुलैया का जवाब

जून की चित्र पहेली का जवाब

जा1	मु	न2		कु3	दा	ल4		क5
ल		दी6	म7	क		ड़		म
	तं8		ग9	र	बा10		ढा11	ल
क12	बू	त13	र		द14	ड़	बा	
ना		स		रे15	ल			लुं16
त17	पे18	ला		त			बो19	गी
	टी		बो20		कै21	म	रा	
नौ22	का		त23	स्वी	र			डो24
		पु25	ल		म26	छू	आ	रा

सुडोकू-20 का जवाब

2	7	4	8	5	9	6	3	1
5	8	3	4	1	6	9	7	2
6	9	1	2	3	7	4	5	8
7	1	6	3	8	2	5	4	9
3	4	5	9	6	1	2	8	7
8	2	9	5	7	4	1	6	3
4	5	8	1	9	3	7	2	6
1	3	7	6	2	5	8	9	4
9	6	2	7	4	8	3	1	5

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

■	1	2	■	3			4	
5	■	6			■	■		■
7	8		■		■	9		10
■		■	11	■	12	■	■	
13				■	14		15	
	■	■	■	16		■		■
17		18	19	■	■	20		21
■	■	22			■		■	
■	23			■	24			

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20

आखिरी तारीख

लवलीन मिश्रा
चित्र: अंकिता ठाकुर

क्या होती है
बचपन की आखिरी तारीख?
जब अकेले
सोने लगते हैं
या जब खुद
नहाने लगते हैं?
या जब पैसे
सँभालने लगते हैं?
या जब मम्मी-पापा
नासमझ लगने लगते हैं?

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म. प्र.
से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन